हिन्दी-रत्नाकर

(हाई स्कूल कक्षाओं के निमित्त)

लेखक
वैदिक धर्म विशारद
श्यामसुन्दर गुप्त, हिन्दी भूषण,
साहित्य प्रभाकर, एफ०, ए०, ए० टी० सी०
सीनिअर हिन्दी टीचर,
डी० ए० वी० हाई स्कूल, अजमेर ।

आगरा
लक्ष्मीनारायण अग्रवाल
पुस्तक विक्रेता
१९३८

प्रकाशक—
लक्ष्मीनारायण अग्रवाल बुकसेलर
हॉस्पिटल रोड आगरा।

मुद्रक—
राधारमन अग्रवाल
मौडर्न प्रेस नमकमण्डी, आगरा

भूमिका

आजकल साहित्य क्षेत्र में क्रमश उन्नति होती जा रही है। अतएव पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त विद्यार्थियों को अपनी विशेष योग्यता करने के लिए अपठित पुस्तकों का पढना अत्यन्तावश्यक है क्योंकि बिना अपठित पुस्तकों के विशेष योग्यता प्राप्त हो ही नहीं सकती। यदि शिक्षा विभाग की अच्छी पुस्तक स्वीकार करने की कृपा रही तो भविष्य में और भी अधिक उन्नति होती दिखलाई देगी। किन्तु खेद है कि स्कूलों में हिन्दी भाषा की शिक्षा की समुचित व्यवस्था न होने से इस कार्य में सफलता देर से हो रही है। वर्त्तमान शिक्षा प्रणाली में पढ़ाई की कसौटी प्राय लिखित परीक्षा है। भाषा व रचना कला का पूर्ण ज्ञान न होने से—विषय की जानकारी होनेपर भी—विद्यार्थी अपने स्फुट भाव परीक्षकों को व्यञ्जित नहीं कर सकते। इसका एक कारण हो सकता है कि उनको अपठित विषयानुकूल पुस्तकों के पढने का अवकाश ही नहीं मिला। एक तो अपठित हिन्दी रचना सम्बन्धी पुस्तकों का अभाव है फिर दो एक हैं भी तो वह केवल 'लकीर की फकीर' हैं। किसी में प्रश्नों की जटिलता है तो किसी में अनुच्छेद रचना की क्लिष्टता है। ऐसी पुस्तकों में विद्यार्थियों को शब्द क अर्थ ही टटोलने में घटों लग जाते हैं। इन सब बातों

को दृष्टिगत करते हुए प्रस्तुत पुस्तक 'अपठित हिन्दी-रत्नाकर' का निर्माण किया है। इस पुस्तक में परीक्षाओं में हिन्दी के दोनों परीक्षा पत्र के सम्बन्ध में आने वाली सभी आवश्यक बातों को भली प्रकार समझाया गया है तथा पुस्तक को रोचक बनाने का प्रयत्न किया गया है। पुस्तक में जो विशेषताएँ हैं उनका उल्लेख नीचे किया गया है।

पुस्तक की विशेषताएँ

१—इस पुस्तक में जितने लेखकों के नमूने दिये गये हैं हिन्दी संसार में प्रायः वे सभी मान्य और श्रद्धा भाजन हैं। प्रारम्भ में दो गद्यान्शों के लेखक राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' और भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र वर्तमान हिन्दी के जन्मदाता और पोषक हैं। इनके अतिरिक्त प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, प० महावीरप्रसाद द्विवेदी, प० पद्मसिंह शर्मा, प० रामचन्द्र शुक्ल, श्री वियोगीहरि, रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दर दास, बी० ए०, बाबू पदुमलाल-पुन्नालाल बख्शी, महामहोपाध्याय रायबहादुर गौरीशंकर हीराचंद ओझा, बाबू रामचन्द्र टन्डन, एम० ए० एल एल० बी०, प० हरिशंकर शर्मा 'कविरत्न' और श्री वासुदेवशरण अग्रवाल, एम० ए०, एल एल० बी० आदि सुप्रसिद्ध लेखकों की गद्यान्शों का समावेश है।

२—अनुच्छेदों की भाषा प्रौढ़, गम्भीर, सुबोध और ललित है।

३—पुस्तक में तीन अध्याय हैं। पहला अध्याय में ६ वीं

कक्षा के लिए दूसरे अध्याय में १० वीं कक्षा के लिए गद्यान्श और तृतीय अध्याय में मुहाविरे, कहावतों का प्रयोग, अँग्रेजी गद्यान्श तथा सुन्दर उपयोगी एक निबन्ध और राजपूताना तथा यू०पी० परीक्षाओं के प्रश्न पत्र उद्धृत किए गये हैं।

४—प्रत्येक गद्यान्श के नीचे प्रश्न दिए गये हैं। प्रश्नों को चार भागों में विभक्त किया गया है।

वे इस प्रकार हैं —

अभ्यास के लिए, रचना के लिए, व्याकरण के लिए और विषय सम्बन्धी प्रश्न। इनका विस्तृत वर्णन आगे किया जायेगा।

५—परीक्षाओं से सम्बन्ध रखनेवाली उपयोगी बातों को यथोचित स्पष्ट रीति से समझाया गया है।

६—कठिन शब्द, मुहाविरे तथा कहावतों का प्रयोग करके भली प्रकार दिग्दर्शन कराया गया है।

७—पुस्तक में ४५ अभ्यास हैं जिनमें २० नवीं कक्षा को और २५ दसवीं कक्षा के निमित्त हैं।

८—प्रत्येक कक्षा के अभ्यासों के अन्त में जटिल शब्दार्थ और टिप्पणियाँ दी गई हैं।

९—इसका टाइप और कागज भी अच्छा है।

प्रश्नों की विशेषता

प्रत्येक अभ्यास के प्रश्नों के सम्बन्ध में छात्रों को एक बात स्पष्ट समझ लेनी चाहिए। अंग्रेजी के प्रश्न Explain

(समझाकर अर्थ लिखो) और Paraphrase (पदानुवाद करो) में अन्तर स्पष्ट है। दोनों शब्द पर्यायवाची नहीं है। छात्र इन्हें पर्यायवाची शब्द समझते हैं। एक उदाहरण देकर हम इनका अन्तर स्पष्ट कर देना चाहते हैं —

(1) Explain the underlined in the following —
(2) Paraphrase

जापान आजकल वेग से उन्नति के शिखर पर चढ़ता चला जा रहा है।

(1) Explanation —

उक्त वाक्य में अलंकारिक भाषा का प्रयोग है। शिखर एक ऊँची चोटी को कहते हैं। अलंकारिक भाषा में उन्नति करने को ऊँचा अथवा शिखर पर चढ़ना कहते हैं। इसी प्रकार अवनति करने को नीचे गिरना कहते हैं। लेखक का उद्देश्य यह है कि जापान वर्तमान काल में बड़ी शीघ्रता के साथ उन्नति करता जा रहा है।

(2) Paraphrase—शीघ्रता से उन्नति कर रहा है।

द्वितीय उदाहरण की विलक्षणता यह है कि जितना भाग रेखांकित हो उसी के स्थान में यदि पदानुवाद किया हुआ वाक्यांश अङ्कित कर दिया जाय तो अर्थ की तथा वाक्य की दृष्टि से वह वहाँ उपयुक्त हो जाय।

इसी प्रकार प्रश्नों में कहीं पद तथा पद समूहों की व्याख्या अर्थ, विशद, अर्थ, आशय, साराश, भावार्थ, सक्षेपार्थ, सरलार्थ, तात्पर्यार्थ और स्पष्टीकरण आदि पूछा गया है। इन सब में

कुछ-न-कुछ अन्तर अवश्य होता है। इन सब बातों को नीचे के उदाहरण से स्पष्ट किये देते हैं ताकि छात्रों को उक्त बातों का भली प्रकार अनुभव हो जाय। इसके अतिरिक्त इसी उदाहरण के साथ ही-साथ यह भी स्पष्ट किये देते हैं कि अभ्यास की गद्य में से अभ्यास के लिए तथा विषय-सम्बन्धी प्रश्नों का उत्तर छात्रों को किस प्रकार देना चाहिए। परन्तु इससे पहले उक्त बातों का उल्लेख कर देना आवश्यक है। वाच्यार्थ समझ कर उसका अर्थ अपने शब्दों मे सक्षेप रीति से कह देना तात्पर्यार्थ है, यही अभिप्राय है, यही आशय है, यही अर्थ है, यही स्पष्टीकरण है, यही सारान्श है। इन सब में शब्दों की ओर कम, परन्तु भाव की ओर अधिक, ध्यान देना पड़ता है, उपमा, रूपक आदि अलकारों का भाव दो एक शब्दों के द्वारा प्रकट किया जा सकता है, कोई बात जो वाच्यार्थ में प्रकट नहीं होती, इन अर्थों में प्रकट करदी जाती है। अतएव एक अ श में तो ऐसे अर्थ वाच्यार्थ से छोटे हो जाते हैं, परन्तु दूसरे अ श में बढ जाते हैं।

सरलार्थ और सक्षेपार्थ में शब्दों की कमी पर ध्यान रक्खा जाता है, इन में भाव सब होने चाहिएँ परन्तु शब्दों का अधिक विस्तार न हो। अन्य बातें तात्पर्यार्थ के समान होती हैं। भावार्थ जानने के लिए और भी गहरे शब्दों में जाना पड़ता है,इसमें देखा जाता है कि लेखक के मन में क्या क्या बातें थी, उसने किस आन्तरिक भाव को इन शब्दों के द्वारा प्रकट करना चाहा है। भावार्थ प्राय बहुत थोड़े शब्दों में प्रकट किया जाता है।

व्याख्या में बहुत कुछ लिखना पड़ता है। शब्दार्थ, तात्पर्य्यार्थ भावार्थ, सब व्याख्या में शामिल हैं, आवश्यकतानुसा उदाहरण भी देने चाहिएँ, उपमा आदि अलंकारों का पूर विवरण देना चाहिए, मार्के के शब्दों का विवरण भी दे चाहिए। इस प्रकार भलीभाँति समझाने के लिए जो कुछ भ आवश्यक हो उसका समावेश 'व्याख्या' में होता है। इस से उक्त बातों का भली भाँति अनुभव हो सकता है। यहाँ पर केवल हम यह बतला देना अभीष्ट समझते हैं कि अभ्यास की गद्य में से अभ्यास के लिए तथा विषय सम्बन्धी प्रश्नों का उत्तर छात्रों को किस प्रकार देना चाहिए। ये सब नीचे के उदाहरण से स्पष्ट हो जायगा। जैसे —

उदाहरण—विवाह का दिन उपस्थित होने पर राजकुमार सुन्दर और बहुमूल्य वस्त्र और आभूषण पहन कर, वशिष्ठादि ऋषियों सहित, विवाह मण्डप में पहुँचे। राजकन्याएँ भी अनेक प्रकार के बहुमूल्य कपड़े और गहने पहन कर, जनक के साथ वहाँ आईं। महर्षि वशिष्ठ ने वेदी बना कर, उस पर अग्नि स्थापन किया और उसके प्रज्वलित होने पर वे आहुती देने लगे। तब राजा जनक लज्जानवमुखी सीता को श्रीराम के सामने और अग्नि के समीप खड़ी करके कहने लगे—"राम! यह सीता हमारी दुहिता है। यह तुम्हारी सहधर्मिणी हुई। तुम इसका पाणिग्रहण करो, तुम्हारा मंगल हो यह महाभागा पतिव्रता हो और छाया की तरह तुम्हारे पीछे रहे।"

अभ्यास के लिए प्रश्न —

१—राजकुमार किस तैयारी के साथ विवाह-सभा मण्डप में पहुँचे ?

२—वशिष्ठ ने उस समय क्या किया ?

३—राजा जनक ने निजदुहिता को आगे कर श्रीराम से क्या कहा ?

उत्तर —

१—राजकुमार सुन्दर और बहुमूल्य वस्त्र तथा गहने पहन कर, वशिष्ठादि ऋषियों के साथ विवाह-समय मण्डप में पहुचे।

२—महर्षि वशिष्ठ ने वेदी बनाकर, उस पर अग्नि रक्खी और उसके जलने पर वे आहुती देने लगे।

३—राजा जनक सीताजी को आगे खडा करके श्रीराम से कहते हैं—"राम! यह सीता हमारी पुत्री है। यह तुम्हारी सहधर्मिणी हुई। तुम इसका पाणिग्रहण करो, तुम्हारा कल्याण हो यह महाभागा हो और छाया की तरह तुम्हारे पीछे-पीछे रहे।"

विषय सम्बन्धी प्रश्न —

१—श्रीरामचन्द्रजी अपने पिता को छोड़ कर विश्वामित्र के साथ क्यों सीता-स्वयम्बर में गये ?

... में राजा जनक ने क्या प्रण ठाना

उत्तर —

१—विश्वामित्र की यज्ञ को राक्षस विध्वंश किया करते थे। अतएव मुनि इसी कारण से अयोध्यापुरी गये और राजा दशरथ से श्रीरामचन्द्रजी तथा लक्ष्मण को माँग कर अपने साथ ले आये। इसलिए श्रीरामचन्द्रजी अपने पिता दशरथ को छोड़ कर मुनि विश्वामित्र के साथ सीता-स्वयम्वर में गये थे।

२—राजा जनक के यहाँ शिवजी का एक धनुष था। एक दिन सीता अपने घर को लीप रही थी उसने उस धनुष को एक ही हाथ से उठा कर दूसरी जगह रख दिया। इस पर राजा जनक ने यह प्रण ठाना था कि जो क्षत्री, वीर राजा इस धनुष को तोड़ देगा। उसी के साथ सीताजी का विवाह कर दिया जावेगा।

प्रस्तुत पुस्तक के लिखने में मैं तभी पूर्णरूप से सफलता समझूँगा जब कि इससे विद्यार्थियों का कुछ लाभ होगा। अतएव मैं आशा करता हूँ कि यह पुस्तक अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होगी।

—लेखक

(अपठित गद्यांश)



प्रथम अध्याय

(१)



व हरिश्चन्द्र ने कहा—शैव्या अब मैं तुम्हें नैहर जाने के लिये नहीं कहूँगा। मैंने पृथिवी-दान* कर के तुमको पाया है। मैं इतने दिनों तक भोग विलास* में तुमको लालसा का खिलौना समझता था। किन्तु आज दीनता के बीच तुम्हारी गम्भीर पवित्र मूर्ति*

देखकर मुझे हिम्मत हुई है। देवि! मैं देखता हूँ कि तुम ममता की मूर्त्ति सी अमङ्गल॰ दूर करने के लिये स्नेह का हाथ फैलाये हो।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—हरिश्चन्द्र ने पृथ्वी दान कैसे किया था? 'उसे करके शैव्या के पाने से' क्या तात्पर्य है?

२—ममता किसे कहते हैं?

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य का सचेपार्थ सरल भाषा में स्पष्ट करो।

२—रेखांकित पदों की व्याख्या करो।

३—'हिम्मत' के ऊपर एक लेख लिखो जो २० पंक्तियों के लगभग हो।

४—पृथिवी का तत्सम् स्वरूप लिखो।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पाङ्कित शब्दों के सविग्रह समास लिखो।

२—शैव्या, कहूँगा, देखकर, और ममता शब्दों का पद परिचय करो।

विषय-सम्बन्धी —

१—हरिश्चन्द्र सम्पत्ति-समय में रानी के प्रति क्या भाव रखते थे और विपत्तिकाल में उन्होंने क्या भाव रक्खा?

२—राजा हरिश्चन्द्र की कथा का सचेप में उल्लेख करो।

सहायक शब्द:—

शब्दार्थ—नैहर = पीहर, माँके यहाँ। भोग विलास = विषयभोग। लालसा = इच्छा।

---

(७)

सावित्री ऋषियों की बालिकाओं के साथ आश्रम में आकर मंत्री से तपोवन⊛ देख आने की बात कह रही थी, इतने में सत्यवान ने वहाँ आकर विनय पूर्वक⊛ कहा—"हम लोग गृहत्यागी⊛ सन्यासी हैं। राज-परिवार⊛ के स्वागत-योग्य कोई वस्तु हम लोगों के पास नहीं है। यहाँ तक कि अन्न जल⊛ भी राजोचित⊛ नहीं। तो भी हम लोगों का जुटाया हुआ और देवता पर चढ़ाया हुआ, जंगली फल-मूल⊛ ग्रहण कीजिये"। मंत्री आदि ने ऋषि-कुमार की सरलता और दीनता पर प्रसन्न होकर उस प्रसाद को ग्रहण किया और अपने को धन्य माना।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—अपनी निरभिमानता प्रकट करने के लिये सत्यवान् ने सावित्री के प्रति क्या क्या कहा? स्पष्ट करो।

२—यह प्रसङ्ग कहाँ का है? इसको विस्तार-पूर्वक वर्णन करो।

३—उक्त गद्यांश का शीर्षक क्या हो सकता है?

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य का सरलार्थ अपनी बोली में स्पष्ट करो।

२—रेखांकित पदों की विस्तृत व्याख्या करो।

३—'दीनता' पर एक संक्षिप्त लेख लिखो।

४—सरलता, राजोचित, प्रसाद, धन्य—को वाक्यों में प्रयोग करो

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों के सविग्रह समास लिखो।

२—आकर, जुटाया हुआ, दीनता—का पदान्वय करो।

विषय-सम्बन्धी —

१—'देवता पर चढ़ाइ वस्तु' का एक नाम बताओ?

२—सावित्री और सत्यवान पर संक्षिप्त टिप्पणी दो।

सहायक शब्द:—

शब्दार्थ—राजोचित = राजा के योग्य। जुटाया हुआ = इकट्ठा किया हुआ।

---

(२)

"भय के पीछे महाराक्षस* पड़ा हुआ है" यह लोकोक्ति सत्य है। यदि तुम बीमारी से डरोगे तो तुम्हें बीमारी अवश्यमेव हो जायगी, यदि तुम दरिद्रता से डरोगे तो दरिद्रता हाथ धोकर तुम्हारे पीछे पडेगी। यदि तुम मृत्यु से भय करोगे, तो समझ लो कि यम-दूत के आने में कुछ भी विलम्ब नहीं है। इसी से कहते हैं कि, तुम अपना भला चाहते हो तो किसी से भय मत खाओ। अभय* होने का उत्तम उपाय आत्मज्ञान* है। यानी मैं कौन हूँ, मेरा सत्य स्वरूप क्या है, यह जानना उत्तम उपाय है। संस्कृत कवियों ने चिन्ता को चिता से अधिक भयंकर बताया है, क्योंकि चिता तो मृतक को जलाती है, परन्तु चिन्ता जीवित को ही जलाया करती है।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—अभय होने का उत्तम उपाय क्या है ?

२—संस्कृत कवियों ने चिन्ता और चिता के सम्बन्ध में क्या कहा है ?

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य का सरलार्थ अपनी भाषा में स्पष्ट करो।

२—रेखांकित पदों का स्पष्टीकरण करो।

३—'चिन्ता' के ऊपर एक लेख लिखो।

४—'हाथ धोकर पीछे पड़ना' का क्या भाव है ? उदाहरण देकर स्पष्ट करो।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों के सविग्रह समास लिखो।

२—करोगे, पड़ेगी, मृतक, की शब्द निरुक्ति करो।

विषय सम्बन्धी —

१—अपना स्वास्थ्य, श्री-वृद्धि, जीवन, इन सबको ठीक रखने के क्या क्या उपाय हैं ?

२—चिन्ता और चिता की तुलना करो।

३—'दरिद्रता बुरी है' इसकी सोदाहरण पुष्टि करो।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—ब्रह्मराक्षस = भूत विशेष, योनि विशेष। आत्मज्ञान = ब्रह्म विषयक ज्ञान। मृतक = मरा हुआ, लाश।

(४)

जिस समय सीताजी रामचन्द्रजी के साथ जनवासे में पहुँचीं उस समय वे अपने स्वामी का प्रथम दर्शन करके मन में, अत्यन्त प्रसन्न हुईं। स्वामी के मुखचन्द्र* को देखते ही उनका मुखकुमुद* प्रफुल्लित हो उठा। रामचन्द्रजी का दर्शन करके सीताजी को ऐसा मालूम हुआ कि ये नवयौवनावस्था* में अभी पदार्पण* कर रहे हैं। रामचन्द्रजी के शरीर से दिव्यसौन्दर्य का रस टपका पड़ता था। उनका प्रत्येक अङ्ग उपाङ्ग* सुदृढ़ स्वरूप और अनुपम शक्ति का आधारस्तम्भ था। उनकी सुन्दर भृकुटियाँ मानसिक तेज और सच्चरित्रता का प्रत्यक्ष प्रमाण दे रही थीं। उनके कमल नेत्र से प्रतिभा प्रदीप्त हो रही थी और उनके मुख पर एक विशेष प्रकार की ज्योति चमक रही थी।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—सीता पर रामचन्द्रजी के प्रथम-दर्शन का क्या प्रभाव पड़ा?

२—उन्होंने रामचन्द्र में क्या सौन्दर्य पाया? क्या झलक देखी? किस रस का अनुभव किया? स्पष्ट समझाओ।

३—उनकी अङ्ग प्रभा का उल्लेख करो।

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य का निष्कर्ष सरल भाषा में स्पष्ट करो।

२—रेखाङ्कित पदों की विशद् व्याख्या करो।

(५)

हे कौरववर्ग* ! हम बार-बार विलाप करते हैं, तथापि हमारे मूर्ख पुत्र युद्ध करने की इच्छा नहीं छोड़ते। बेटा दुर्योधन! क्या समझ कर तुम सारी पृथ्वी पर अधिकार करने की बुरी अभिलाषा रखते हो। उसकी अपेक्षा उचित यह है कि पाण्डवों को राज्य का जो अंश मिलना चाहिये उसे देकर सुख पूर्वक* अपना राज्य करो। पाण्डव लोग बड़े धर्मात्मा* हैं। उनकी बात में, उनकी शर्त में अन्याय* का लेश भी नहीं है। उन्होंने जो प्रस्ताव किया है, वह बहुत ही उचित है।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—उक्त गद्य का प्रसंग बताओ। इसमें कौन किसे समझा रहा है?

२—राज्य को हड़प जाने की अभिलाषा कैसी थी?

३—पाण्डवों के कुछ गुणों का उल्लेख करो।

रचना के लिए —

१—उक्त गद्यांश का निष्कर्ष अपनी बोली में स्पष्ट करो।

२—रेखांकित पदों का स्पष्टीकरण करो।

३—'अन्याय' के ऊपर एक लेख लिखो।

४—'दुर्योधन' के ऊपर सचित्र टिप्पणी दो।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों के सविग्रह समास लिखो।

२—अभिलाषा, बात, लेश, वह—का पद परिचय करो।

विषय सम्बन्धी —

१—महाभारत युद्ध का क्या फल हुआ ? स्पष्ट वर्णन करो।

२—पांडवों और कौरवों की तुलना करते हुए अपने विचार प्रकट करो।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—मूर्ख पुत्र = अज्ञानी पुत्र। अन्याय = न्यायबहिर्भूत, अविचार। प्रस्ताव = विषय, प्रसङ्ग।

---

(६)

भले ही कोई नीरस नास को चूसे, पानी से घी या धूल से तेल निकाले, अथवा आकाश-वाटिका* से सुमन-सञ्चय* करे हमें कोई आपत्ति नहीं। हम गँवार लोग तो अपनी सीधी सादी बुद्धि को उन सिद्धान्तों में न उलझा कर, साहित्य माधुरी* के आस्वादी बनना चाहते हैं। भले ही हमें 'ओल्ड फूल' या खूसट की उपाधि से भूषित करे—हम अपने सिद्धान्त से टस से मस होने के नहीं। किससे कहें और क्या कहें ? हम लोगों को जितना आनन्द इस साहित्य माधुरी में मिलता है, उतना इस लोक में तो क्या, उस लोक में भी न मिलता होगा, यह अत्युक्ति नहीं, सिद्धान्त है। उस लोक का आनन्द इसी माधुरी द्वारा ही तो प्रत्यक्ष होता है। उस पार की छटा इसी माधुरी-नौका पर आरूढ होने ... दृष्टिगोचर होती है।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—उक्त गद्य में किन असम्भव बातों का सम्भव होना बतलाया गया है ?

२—हम उस लोक का आनन्द किसके द्वारा प्रत्यक्ष होता है ?

३—उक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक क्या हो सकता है ?

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य का निष्कर्ष सरल भाषा में अंकित करो।

२—रेखांकित पदों की व्याख्या करो।

३—'टस से मस न होना', 'मूर्चित', 'आरूढ़', 'दृष्टिगोचर'—को वाक्यों में प्रयोग करो।

४—'साहित्य' पर एक संक्षिप्त लेख लिखो।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों के सविग्रहसमास लिखो।

२—भले ही, कोई, क्या, उतना, मिलता होगा—की शब्द निरुक्ति करो।

३—अन्तिम वाक्य का वाक्य विश्लेषण करो।

विषय-सम्बन्धी —

१—'साहित्य' किसे कहते हैं ? स्पष्ट विवेचन करो।

२—उक्त गद्यांश में किस अलङ्कार की छटा का दिग्दर्शन हो रहा है—बताओ।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—नीरस = सूखा। सुमन = फूल। टस से मस होने के नहीं = तनिक भी नहीं डिगने के। अत्युक्ति = असम्भव कथन। आरूढ़ = सवार।

साहित्य में उपयोगितावाद का सिद्धान्त मानने से भाव प्रधान हो जाता है और भाषा गौण। लोकप्रिय वही हो सकता है जो सभी लोगों के लिए बोधगम्य हो। साहित्य का क्षेत्र दो ही चार विद्वानों का विहारस्थल* नहीं रह जाता। उसमें सर्वसाधारण को प्रवेश करने की भी अनुमति रहती है। सबसे बड़ी बात यह है कि जो साहित्य माधुरी, ज्ञान के उच्च शिखर पर बैठ कर अनन्त में विहार किया करते हैं, उन्हें पृथ्वी पर आकर अपनी विद्या का परिचय देना पड़ता है। अतएव साहित्य भाषा देववाणी* नहीं होगी मनुष्यवाणी होगी। जो लोग अनन्त* की अस्पष्ट छाया का वर्णन कर अपनी कृति को छायात्मक बना डालते हैं, उन्हें अपने काव्य का कुहासा दूर करना पड़ेगा।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—साहित्य में उपयोगितावाद का सिद्धान्त मानने से क्या हो जाता है?

२—किन लोगों को अपने काव्य का कुहासा दूर करना पड़ता है।

३—उक्त गद्य का उपयुक्त शीर्षक क्या हो सकता है?

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य का निष्कर्ष सरल भाषा में स्पष्ट करो।

२—रेखांकित पदों का स्पष्टीकरण करो।

३—'विद्या' के ऊपर एक लेख लिखो जो कि १० पंक्तियों के लगभग हो।

४—देववाणी और मनुष्य-वाणी पर संक्षिप्त टिप्पणी दो।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों का विग्रह करो और समास भी बतलाओ।

२—क्षेत्र, ग्राम, आकर, दूर का पद परिचय करो।

३—द्वितीय वाक्य का वाक्य विग्रह करो।

४—उक्त गद्यांश में से कुछ विभक्तियाँ छाँटो।

विषय सम्बन्धी —

१—काव्य किसे कहते हैं?

२—'छायात्मक' का क्या तात्पर्य है? स्पष्ट विवेचन करो।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—उपयोगितावाद = फल साधनता विचार, अनुरूप्य सम्भाषण्य । गौण = अप्रधान । बोधगम्य = ज्ञानप्राप्य । अनन्त = आकाश । देववाणी = संस्कृत भाषा । अनन्त = भगवान् विष्णु । कुहासा = कुहरा ।

३—'इतिहास' पर एक लेख लिखो जो २५ पंक्तियों के लगभग हो।

४—श्मसान, जारी के शुद्ध हिन्दी शब्द लिखो।

५—धार्मिक, क्रमश, कालचक्र, घात प्रतिघात को वाक्यों में प्रयोग करो।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों में सविग्रह समास लिखो।

२—मुख्य, उन, श्रमी होता रहा है का पदान्वय करो।

३—अन्तिम वाक्य का वाक्य पृथक्-करण करो।

विषय सम्बन्धी —

१—युग किसे कहते हैं ? यह कितन हैं ?

२—इङ्गलैण्ड की पार्लामेंट' का विवेचन करते हुए स्पष्ट समझाओ।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—आदिम स्थानों पर = पूव के तथा आदि के स्थानों पर। संघर्षण से = युद्ध से, मेल मिलाप से। घात प्रतिघात = चोट पर चोट।

---

(६)

दूसरी विद्याधरी—"हाँ तुम से क्या कहें और तुम्हे इतना भी ज्ञान नहीं है कि हिन्दू-साम्राज्य-सूर्य्य* इसी रणभूमि-अस्ताचल* में डूबा है। चौहान-कुल भूषण* पृथ्वीराज का इसी युद्ध में सर्व्वरान्त हुआ है।"

पहली विद्या०—"विहारिणी ! भला कह तो, यह वीर कैसे गिराया गया ? क्या उसके हाथ में लोहे की कमान नहीं थी ? क्या उसका साहस क्षीण हो गया था ? आश्चर्य ! जिस पृथ्वीराज के भुजबल* से अनेक बार यवन समूह पराजित हुआ है, उसका यह परिणाम है !"

दूसरी विद्याधरी—"विलासिनी ! यदि भाई का भाई शत्रु न हो—यदि शैलवासिनी* सरिता ही शृङ्ग को न तोड़े तो भला दूसरा क्या कर सकता है ?"

प० विद्या०—"क्या किसी भारतवासी का ही यह काम है !"

दू० विद्या०—"हाँ, पृथ्वीराज के श्वसुर जयचन्द का !"

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—दूसरी विद्याधरी से पृथ्वीराज का रणभूमि में मरण सुनकर पहली विद्याधरी क्या शंका करती है ? स्पष्ट बतलाओ।

२—पहली विद्याधरी की शंका का किस प्रकार समाधान होता है ?

३—उक्त गद्य का उपयुक्त शीर्षक क्या हो सकता है ?

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य का सारांश सरल भाषा में स्पष्ट करो।

२—रेखांकित पदों की विस्तृत व्याख्या करो।

३—'साहस' के ऊपर एक लेख लिखो।

४—मुअवल, पराजित, भाई का भाई—का वाक्यों में प्रयोग करके स्पष्ट करो।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों के सविग्रह समास लिखो।

२—काल, कैसे, आश्चर्य, दूसरा, यह—पद-परिचय करो।

३—"क्या किसी   यह काम है ?" वाक्य का वाक्य विश्लेषण करो।

विषय सम्बन्धी —

१—पृथ्वीराज सम्बन्धी ऐतिहासिक घटना का उल्लेख करो।

२—जयचन्द पृथ्वीराज का शत्रु क्यों हो गया था ? इसके शत्रु होने का क्या प्रभाव पड़ा ? स्पष्ट समझाओ।

३—उक्त गद्य किस अलंकार में है ? स्पष्ट समझाओ।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—हिन्दू-साम्राज्य-सूर्य इसी   डूबा है = हिन्दू साम्राज्य सूर्य इसी युद्धस्थलरूपी अस्ताचल पर्वत पर डूबा है अर्थात् महाराज पृथ्वीराज इसी रणभूमि में मारे गये हैं। सर्वस्वान्त = सर्वनाश, सत्यानाश, सर्वशान्ति अथवा मरण। यवन = मुसलमान। शैलवासिनी = पर्वतनिवासिनी। सरिता = नदी। शृङ्ग = चोटी।

(१०)

जयचन्द—"बोलो मत, मैं एक बार फिर उसी गजेन्द्र पर चढ़कर प्रायश्चित करूँगा, जिस मदान्ध पर चढ़ कर मैं भी मदान्ध हो गया था। हाँ, सैनप, एक बात कहना मैं भूल गया था। कन्नौज निवासियों से कह देना कि तुम्हारे पापी राजा ने, जिनकी तुम लोगों ने बहुत सी आज्ञायें मानी हैं, एक अन्तिम प्रार्थना यह की है कि यदि हो सके, तो शाहबुद्दीन का बध करके उसकी रक्तधारा* से दो एक अञ्जुली, जयचन्द के नाम पर देना, क्योंकि पापियों को नरक में यही पीने को मिलता है। बस, जाओ!"

(सैनप का प्रस्थान, जयचन्द्र का गजारोहण और गंगा में धँसना)

जयचन्द—बस, महाशय ठहरो। (आकाश की ओर देखकर) देवि! एक तो मैं नहीं कर सका, पर दूसरा तो मेरे वश में है, वह प्रायश्चित करता हूँ। देश द्रोह*के लिए आत्मबध! हाँ फिर इससे बढ़कर दूसरा स्थान कहाँ है? पतित पावनी, * प्रणाम [कूद पड़ता है]।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—जयचन्द ने अपने सैनप से कन्नौज निवासियों के लिए क्या कहला भेजा था?

२—उक्त गद्यांश का उपयुक्त प्रसङ्ग क्या है ?

३—जयचन्द किस कार्य के करने के लिए उतारू हो रहा है।

रचना के लिए —

१—उपर्युक्त का निष्कर्ष सरल भाषा में समझाओ।

२—रेखांकित पद-समूहों की व्याख्या करो।

३—'गंगाजी' के ऊपर एक लेख लिखो।

४—मदान्ध, रक्तधारा, प्रायश्चित, आत्मवध—को वाक्यों में प्रयोग करो।

५—घात, नाम, नरक, दूसरा—के तत्सम स्वरूप बतलाओ।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों का विग्रह करो और समास भी बतलाओ।

२—गजेन्द्र, कन्नौज, प्रस्थान, प्रणाम, कूद पड़ता है—का पदान्वय करो।

३—उक्त गद्यांश में से सर्वनाम शब्दों को छाँटो।

४—गजेन्द्र, मदान्ध, गजारोहण, महाशय—का सन्धि विच्छेद करो।

विषय-सम्बन्धी —

१—महाराज जयचन्द्र का संक्षेप में चरित्र चित्रण करो।

२—लेखक की नाट्यशैली और भाषा प्रयोग पर अपने विचार प्रकट करो।

३—'शहाबुद्दीन गौरी' पर संक्षिप्त टिप्पणी दो।

सहायक शब्द —

शब्दार्थ—शहाबुद्दीन = मुहम्मदगोरी। गजारोहण = हाथी पर सवार होकर। प्रायश्चित = पाप नाश करने वाला कर्म। आत्मवध = आत्मघात, स्ववध। पतित पावनी = श्री गंगाजी से आशय है।

(११)

जुए की पद्धति विश्व व्यापक* है। सुधरे तथा असभ्य सभी देशों में जुआ खेला जाता है। जुए का कब से श्रीगणेश हुआ, यह ठीक ठीक नहीं मालूम किया जा सका। परन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इस प्रथा के प्रारम्भ होने के समय लोगों की मनोवृत्ति यह थी कि "चलो, जो कुछ हमारे पास है, उसे उड़ा दिया जाय।" यह भावना हम आजकल* भी सभी देशों के जुआरियों में पाते हैं। परन्तु भिन्न भिन्न* देशों में जुआ खेलने की रीति और साधन अवश्य भिन्न भिन्न है। एबीसिनिया में जुआ पैसों आदि की सम्पत्ति से नहीं खेला जाता है। जब यहाँ के जुआरी पूरे जोश में आ जाते हैं तब वे अपनी धर्मपत्नियों को भी दाँव पर लगाने में नहीं चूकते। कितने ही ऐसे देश हैं, जहाँ इसके द्वारा पारस्परिक वैर का बदला लेने की प्रथा है। अल्बीनिया में भी इसका प्रचलन है। एशिया और अफ्रीका के अनेक प्रदेशों में मनुष्य के साहस की ठीक परीक्षा जुए से ही की जाती है।

प्रश्न

अभ्यास के लिये —

१—भिन्न भिन्न देशों के जुआ खेलने की रीति और साधन वर्णन करो।

२—जुआ की प्रथा का प्रारम्भ किस मनोवृत्ति से होना स्वाभाविक है, स्पष्ट बतलाओ।

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य का सरलार्थ सरल भाषा में स्पष्ट करो।

२—श्रीगणेश, जोश में आ जाते हैं, पारस्परिक, परीक्षा—को वाक्यों में प्रयोग करो।

३—'जुए' के ऊपर एक लेख लिखो।

४—रेखांकित को सविस्तार समझाओ।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों के सविग्रह समास लिखो।

२—अवश्य, परन्तु, वैर, परीक्षा का पदव्याख्या करो।

३—अनेक का बहुवचन क्या होता है?

४—मनोवृत्ति और पारस्परिक की संधियाँ बतलाओ और उनके नियम भी बतलाओ।

विषय-सम्बन्धी —

१—क्या हमारे देश में भी पहिले से जुए की प्रथा चली आती है? सोदाहरण पुष्टि करो।

२—क्या जुए के ही कारण महाभारत युद्ध हुआ था? स्पष्ट-व्याख्या करो।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—पद्धति = परिपाटी। श्रीगणेश हुआ = प्रारम्भ हुआ। मनोवृत्ति = मन की इच्छा। धर्मपत्नियों = स्त्रियाँ। पारस्परिक = आपस का। प्रथा है = रिवाज है। प्रचलन = प्रचार, व्यापकता।

(१२)

तुलसीदास* ने अपने काव्य में सांसारिक प्रेम को अल्पातिअल्प स्थान दिया है। सूरदास ने कृष्ण और गोपियों में सांसारिक प्रेम कराकर अलग छोड़ दी है। तुलसीदास को सदा यह ध्यान रहता है कि हमारे राम परब्रह्म हैं। सूरदास ने एक बार कृष्ण को अवतार मानकर उन्हें मनुष्य बना दिया है, उनसे मनुष्य का सा बर्ताव कराया है। कृष्ण और राधा, कृष्ण और रुक्मिणी के प्रेम के बारे में कोई कुछ नहीं कह सकता पर अन्य गोपियों का प्रेम सांसारिक सदाचार की सीमा को उल्लंघन कर गया है। हम कह चुके हैं कि सदाचार भक्ति-मार्ग का एक प्रधान लक्षण है, तो सूरदास के व्यतिक्रम का कारण क्या है ? स्वयं उन्होंने दो बातें कही हैं—एक तो यह कि गोपियाँ वास्तव में मुनियों की अवतार थीं जो परब्रह्म से रमण करना चाहती थीं, दूसरी यह कि अप्सराओं की अवतार थीं जो कृष्णावतार* के समय ब्रह्मा के आदेश से, भूलोक में आई थीं।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—सूर का सांसारिक प्रेम की ओर क्यों अधिक झुकाव था ? स्पष्ट उल्लेख करो।

२—सूर का प्रेम सदाचार की सीमा का उल्लंघन करता क्या कारण है ?

३—सूर ने गोपिकाओं और श्रीकृष्ण के इस प्रेम सम्बन्ध के क्या कारण बतलाये हैं।

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य का सरल भाषा में स्पष्ट करो।

२—रेखांकित पद-समूहों का अर्थ समझा कर लिखो।

३—'प्रेम' के ऊपर एक लेख अंकित करो जो लगभग २५ पंक्तियों के हो।

४—' सूर और तुलसी के उपासना भेद के कारण भी दोनों कवियों के प्रेम की अभिव्यक्ति में अन्तर आ गया है।" इसका स्पष्टीकरण करो।

५—सूर और तुलसी की तुलना करते हुए अपने विचार प्रकट करो।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों के सविग्रह समास लिखो।

२—सदा, प्रेम, अवतार, वास्तव, थाह थीं—का पदान्वय करो।

३—प्रथमवाक्य का वाक्य पृथक्करण करो।

४—'कोई' का तत्सम स्वरूप क्या है? 'कोई' के प्रयोग की विवेचना कीजिए।

विषय सम्बन्धी —

१—तुलसी और सूर की समता और विषमता दिखलाओ।

२—तुलसी और सूर की कविता पर सचित्र टिप्पणी करो।

३—तुलसी बड़ा है या सूर? सोदाहरणपुष्टि करो।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—काव्य में = कविता में। अल्पातिअल्प = सूक्ष्म से भी सूक्ष्म, थोड़े से भी थोड़ा। व्यतिक्रम = विपर्य, विलोम। परब्रह्म = परमात्मा, पुरुषोत्तम। रमण करना चाहती थीं = भोग विलास करना चाहती थीं। आदेश = आज्ञा। भूलोक = संसार।

(१३)

कोई दिन था कि हम कुछ* थे, कुछ नहीं, बहुत* कुछ थे। देवता हमारा मुँह जोहते थे, स्वर्ग में हमारी धूम थी और धरती हमारे उधरने से उधरती थी। हम आसमान में उड़ते, समुद्र को छानते, जंगलों को खंगालते और पहाड़ों को हिला देते थे। दुनिया में हमारे नाम लेवा थे, देश-देश में हमारी धाक थी, दिशा* हमारी जोति से जगमगाती थीं और असमान के तारे हमें आँख फाड़ फाड़ कर देखते थे। हम अन्धकार में उजाला करते थे, अन्धे आँखों को खोलते थे, सोतों को जगाते थे और उकठे काठ को भी हराभरा बना देते थे। सूरमापन हम पर निछावर होता था, दिलेरी हमारे बाँट पड़ी थी, बहादुरी हमारा दम भरती थी, और प्रेम ही हमारा बाना था, हम बेजान में जान डालते थे, बिगड़ों को बनाते थे, और भूलों को राह पर लाते थे। आज हमारे घरों में फूट पाँव तोड़ कर बैठी है। बैर अकड़ा हुआ खड़ा है, अनबन की बन आई है, और रगड़े झगड़े गुलछर्रे उड़ा रहे हैं। हमसे लम्बी लम्बी बातें सुनलो, लम्बी डगें भरने की कहानियाँ कहलवा लो, लेकिन लम्बी तान कर सोना ही हमको पसन्द है। आँख होते हमें सूझता नहीं, हाथ होते हम बेहाथ हैं, पाँव होते बे पाँव, समझ चल बसी, विचारों का दिवाला निकल गया,

आस॰ पर ओस पड गई, मगर कान पर जूँ॰ तक नहीं रेंगती। लोग काँटों में फूल चुनते हैं, हम काँटों में उलझ उलझ मरते॰ हैं आबरू उतर गई, पत पानी चला गया, बड़ाई धूल में मिल गई। मगर हम धूल फाँकने में ही मस्त हैं।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—हम भारतवासियों की वर्तमान दशा कैसी है ? स्पष्ट उत्तर दो।

२—दुनिया में हमारे नाम लेवा थे ? इसको समझा सिद्ध करो।

३—अतीतकाल में भारतवासी कैसे थे ? सतर्क उत्तर दो।

रचना के लिए —

१—उक्त गद्यांश का सरलार्थ अपनी भाषा में समझाओ।

२—रेखांकित पदों का अर्थ स्पष्टरूप से सरल भाषा में स्पष्ट करो।

३—'फूट' अथवा 'बड़ाई' के ऊपर एक लेख लिखो।

४—धरती, आसमान, काठ, घर, आम—के तत्सम स्वरूप लिखो।

५—"मुँह जोहना", "सूरमापन हमपर निछावर होता था", "बहादुरी हमारा दम भरती थी", 'ओस पड़ना', 'जूँ का न रेंगना', "धूल में मिलना"—इनको अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों का पद परिचय करो।

२—रगड़े झगड़े, उलझ-उलझ, और हराभरा—के सविग्रह समास लिखो।

३—प्रथम वाक्य का पृथक् करण करो।

विषय-सम्बन्धी —

१—"देवता हमारा मुँह जोहते थे, स्वर्ग में हमारी धूम थी" इसकी सोदाहरणपुष्टि करो।

२—"सूरमापन हम पर निछावर होता था" इसको किसी प्रसिद्ध भारतवासी योधा पर घटित करो।

३—फूट ने भारतवासियों को क्या हानि पहुँचाई है ? सतर्क उत्तर से पुष्टि करो।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—मुँह जोहते थे = दर्शन करते थे, मुँह देखने की बाट देखते थे। अनबन = फूट, बैरभाव। गुलछर्रे उड़ा रहे हैं = मौज कर रहे हैं। धूल में मिल गई = नष्ट हो गई। लम्बी तानकर सोना = गहरी नींद से सोना।

८

(१४)

राणा—कविराजजी, आप मुझे व्यर्थ बड़ाई देते हैं, मैं तो निमित्त मात्र था। जो ये सब राजपूत और भील सरदारगण सहायता न करते तो मैं अकेला क्या कर सकता था? अहा! झाला महाराज मानसिंह ने तृणवत् अपना शरीर दे दिया और मुझे बचाया, महाराज राठौड़राव, राजा रामसिंह ऐसे वीर पुरुषों ने मेरे लिये क्या-क्या न किया। हाय! मैं अब इनके लिये क्या कर सकता हूँ? बड़े कविराज जी ने अपने देश की जैसी सेवा की और जिस भाँति प्राण दिया कौन नहीं जानता? जब तक पृथ्वी रहेगी, इन लोगों का नाम स्वर्णाक्षरों से मेवाड़ के इतिहास में अङ्कित रहेगा। प्यारे चेतक ने पशु होकर मेरा जैसा उपकार किया उससे मैं कभी उऋण नहीं हो सकता! मन्त्रिवर, जहाँ चेतक का शरीर गिरा है वहाँ एक उत्तम समाधि बनवाई जाय और उसके सम्मानार्थ मेला लगा करे। मैं स्वयं वहाँ चला करूँगा। (कविराज से) कविराजजी, आप एक पर्वाना लिखिए कि जब तक मेरे और भामाशा के वंश में कोई रहे, मन्त्री का पद भामाशा के वंशज को ही दिया जाय। आज मैं इन्हें प्रथम श्रेणी के सरदारों में स्थान देकर झटक पट ताजीम, पैर में सोने का लंगर, पाग पर माँझा आदि यावत् प्रतिष्ठा बख्शता हूँ, जो इनकी सेवा के आगे सर्वथा तुच्छ है।

प्रश्न

अभ्यास के लिये —

१—राणा ने 'चेतक' के प्रति क्या कहा है ?

२—राणा कविराज से भामाशा के विषय में क्या कहते हैं ? स्पष्ट बतलाओ।

३—राणाजी ने किन किन व्यक्तियों की सराहना की है ? और क्यों। सतर्क उत्तर से पुष्टि करो।

रचना के लिए —

१—उक्त का भाव सरल भाषा में स्पष्ट करो।

२—रेखांकित पद समूहों का स्पष्टीकरण करो।

३—'उपकार' के ऊपर एक लेख अंकित करो।

४—पर्वाना, ताजीम, बख्शता—के शुद्ध हिन्दी शब्द बताओ।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों के सविग्रह समास लिखो।

२—व्यर्थ, प्यारे, प्रतिवर्ष दिया जाय, पद—की शब्द निरुक्ति करो।

३—"प्यारे चेतक ने नहीं हो सकता"—वाक्य विश्लेषण करो।

विषय-सम्बन्धी —

१—राणाप्रताप के सम्बन्ध में ऐतिहासिक घटना का उल्लेख करो।

२—राणा ने भामाशा की क्यों इतनी प्रशंसा की—स्पष्ट समझाओ।

३—मानसिंह, रामसिंह और भामाशा पर संक्षिप्त टिप्पणी करो।

४—उक्त गद्य के लेखक की भाषा पर अपने विचार प्रकट करो।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—अङ्कित रहेगा = लिखा रहेगा। चेतक = राणा प्रताप के घोड़े का नाम है। ताजीम = राज दरबारों में होने वाला एक प्रकार का समान। यावत = जितनी। बख्शता हूँ = देता हूँ। खँगर = कड़ा। आँकड़ = एक प्रकार का [illegible]।

(१५)

सरमद नाम का एक मशहूर सूफी था। इसलिये यह औरंगजेब का क्रोधभाजन हुआ। औरंगजेब की आज्ञा से मक्कार मुसलमानों की एक कमेटी सरमद का न्याय करने को बैठी। चार्ज लगाया गया कि वह नंगा रहता है। अगर असल में औरंगजेब का यही मतलब था तो नागे बैरागी* पहले कत्ल होने चाहिएँ थे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। सरमद का बड़ा भारी और मुख्य अपराध तो यह था कि वह दारा का मित्र था। दारा के मरने पर भी औरंगजेब डरता था कि कहीं सरमद अपनी कुवत से कुछ बला न गिराये। औरंगजेब को पता नहीं था कि सन्तों के लिये न कोई मित्र है न कोई शत्रु, संसार को तृण समान जानने वाले महात्मा को औरंगजेब की सल्तनत और शान की क्या परवा थी? अधम औरंगजेब के अन्यायी न्यायकारियों ने फकीर को प्राणदण्ड * की आज्ञा दी। लेकिन जो इन लोगों के लिये बड़ी भारी चीज थी वह सरमद के लिये महज दिल्लगी थी। जो दिन-रात प्रीतम के प्रेम में मतवाला रहता था वह कितने दिन तक उसका वियोग सह सकता था?

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—सरमद कौन था?

२—औरंगजेब की मक्कार मुसलमानों की कमेटी ने सरमद के प्रति क्यों दोष लगाया ?

३—अन्यायी न्यायकारियों ने फकीर को क्या दण्ड दिया था ?

४—नागे और वैरागियों में क्या अन्तर है ?

रचना के लिए —

१—उक्त गद्यांश का निष्कर्ष केवल चार पंक्तियों में अङ्कित करो।

२—रेखांकित पद-समूहों का स्पष्टीकरण करो।

३—'प्रेम' अथवा 'न्याय' पर एक लेख लिखो।

४—मक्कार, कमेटी, कूवत, बला, सलतनत, परवा, दिल्लगी के शुद्ध हिन्दी शब्द बताओ।

५—अधम, न्याय, प्रेम, वियोग, शत्रु—के विलोम शब्द बताओ।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों के सविग्रह समास लिखो।

२—इसको, वही, डरता था, लेकिन, कितने—का पद परिचय करो।

३—"अधम औरङ्गजेब के ... आज्ञा दी" वाक्य का वाक्य पृथक्करण करो।

विषय-सम्बन्धी —

१—उक्त गद्य की शैली पर अपने विचार प्रकट करो।

२—औरङ्गजेब, दारा, सरमद—पर टिप्पणी करो।

३—औरङ्गजेब का चरित्र चित्रण करो।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—क्रोध-भाजन = क्रोध का पात्र। चार्ज = कसूर, दोष। नागे = वह साधू जो गृहस्थी नहीं होते नागे कहलाते हैं। कूवत = बल, शक्ति। बला = आफत, कष्ट। प्राणदण्ड = फाँसी। प्रीतम = प्यारे, यहाँ तात्पर्य भगवान् से है। वियोग = जुदाई।

करण, प्रकृति की विविध चेष्टा और दैव, इन सब के संयोग से कर्म होता है और इन सब की योजना करने वाला ईश्वर ही तुम्हें कर्म में नियोजित करता है। इसलिये इसी परमेश्वर का केवल पालन करना तुम्हारा धर्म है।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—भक्ति-मार्ग का प्रवर्तक कौन था ?

२—भगवद्गीता की क्या विशेषताएँ हैं ?

३—भगवद्गीता किन बातों को नहीं बतलाती ? स्पष्ट उल्लेख करो।

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य का भाव सरल भाषा में स्पष्ट करो।

२—रेखांकित पद समूहों की विशद् व्याख्या करो।

३—'भगवान् की भक्ति' पर एक लेख लिखो।

४—अवलम्बन, नियन्त्रण, परायण, समाधान, योजना—को अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पाङ्कित शब्दों के सविग्रह समास लिखो।

२—नई, गीता, छोड़ कर, विविध, तुम्हारा—का शब्दान्वय करो।

(१६)

श्रीमद्भगवद्गीता ने ही पहले पहल स्त्रियों और शूद्रों के मोक्षाधिकार का विधान किया है और सबके लिये भक्ति मार्ग का द्वार खोल दिया है। यों तो संसार में कोई वस्तु नई नहीं है, पर भक्ति-मार्ग के प्रवर्तक श्रीकृष्ण ही हुए हैं और आज इस मार्ग का जितना अवलंबन होता है, उतना और किसी मार्ग का नहीं। यह मार्ग सब के लिये सुगम भी है। भगवद्गीता की यह एक विशेषता है। दूसरी विशेषता प्रवृत्ति और निवृत्ति का नियंत्रण है। भगवद्गीता यह नहीं बतलाती कि ईश्वर को भूलकर या ईश्वर के नाम पर संसार के सब सुख लूटते रहो और यह भी नहीं बतलाती कि संसार को छोड़ कर जंगल में चले जाओ। गीता यह बतलाती है कि कर्म छोड़ने से नहीं छूटता, कर्म करना ही पड़ता है। कर्म सातत्य का अबाधित नियम बतला कर श्रीकृष्ण फल-त्याग पूर्वक कर्म करने का उपदेश देते हैं। निवृत्ति परायण लोगों को इस प्रकार कर्ममार्ग में प्रवृत्त करके श्रीकृष्ण ने समाज रक्षा की व्यवस्था की। फलाशा छोड़ कर कोई कैसे कर सकता है? इस शंका का श्रीकृष्ण ने पूर्ण समाधान किया है। फलाशा छोड़ कर कर्म करो, फल तुम्हारे हाथ में नहीं है, कर्म को तुम अकेले नहीं करते—अधिष्ठान, कर्त्ता,

(१७)

सारांश वह अपने काल का पूर्ण प्रतिनिधि था। साथ ही इसके वह अपने काल को पहचान सकता था। उसे मालूम था कि इस कार्य में लोग मेरा साथ देंगे और उनका उपयोग करना मेरा कर्तव्य है। उसे आन्तरिक स्फूर्ति हो गई थी कि परमेश्वर* ने मुझे इसी कार्य के लिए भेजा है। उसे विश्वास हो गया था कि ईश्वर मुझे सफलता देगा। शिवाजी का व्यक्तित्व समझने के लिये हम अपने से एक प्रश्न कर सकते हैं। उस परिस्थिति में रहने वाले लाखों लोग थे, पर शिवाजी ही को क्यों स्वराज्य स्थापना की स्फूर्ति हुई? मारटिन लूथर के समय पोप के घृणित कृत्यों को देखने और समझने वाले लाखों थे, पर विटेनबर्ग के चर्च पर लेख लिख कर चिपकाने की स्फूर्ति और हिम्मत इसी महापुरुष को क्यों हुई? इस प्रश्न के उत्तर में यदि आप कुछ कह सकते हैं, तो यही कहेंगे कि परिस्थिति का महत्त्व तो है ही, पर इसका उपयोग करने का महत्व व्यक्ति को है। यही उत्तर शिवाजी के लिए भी उपयुक्त है। उसके समय में स्वतन्त्रता की पुकार पैदा हो गई थी। पर लोक शक्ति बिखरी हुई थी, और मराठे लोग आपस में ही मार काट किया करते थे।

३—अंतिम वाक्य का वाक्य विग्रह करो।

४—सुगम, परायण, शूद्र—से भाववाचक संज्ञाएँ बनाओ।

विषय सम्बन्धी —

१—श्रीकृष्ण ने गीता किस समय पर और क्यों रची?

२—गीता का हिन्दू-समाज में क्या स्थान है?

३—श्रीकृष्ण पर संक्षिप्त टिप्पणी करो।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—प्रवृत्ति = कार्य में लगने की इच्छा। निवृत्ति = बन्धन मुक्ति, विश्राम। नियन्त्रण है = बँधा हुआ है, नियमित है। अधिष्ठान = आधार या देश जिसका कार्य पर प्रभाव पड़ता है। कर्त्ता = करने वाला। करण = जिसके द्वारा किया जाय। दैव = भाग्य। योजना = मिलाप। नियोजित = नियुक्त, संयोजित।

सहायक शब्दः—

शब्दार्थ—परिस्थिति = देशकाल की दशा। घृणित कृत्यों को = निन्दनीय कार्यों को। स्फूर्ति = तेजी, जोश। महत्त्व = गौरव। उपयुक्त = ठीक। स्वतन्त्रता = स्वाधीनता, आजादी।

(१८)

राजस्थान ने किसी समय यौधेय और मालवगणों को शरण दी थी। पञ्जाब प्रदेश के समान ही मरुभूमि भी अनेकगण राज्यों की जननी रही है। उनके अङ्क और लाञ्छनों से चिह्नित मुद्राएँ आज भी पाई जाती हैं। यहाँ की मध्यमिका नगरी किसी समय शिवि जनपद की राजधानी थी। उसमें सङ्कर्षण और वासुदेव के देवधाम थे। इसी राजस्थान में विराट् नगर था, जहाँ पाण्डु कुल* के वंशतन्तु* को अविच्छिन्न रखने वाली देवी उत्तरा का जन्म हुआ था। यहीं दक्षिण में महाकवि माघ की जन्मभूमि श्रीमाल नगरी है। राजस्थान के क्षत्रियों के छत्तीस कुलों का पृथक् पृथक्* विस्तार-वर्णन प्राय असम्भव ही है। पद्मिनी और दुर्गावती की जन्मभूमि* को आर्य सन्तान* अब भी श्रद्धा के साथ प्रणाम करती है। भक्ति-स्रोतस्विनी* मीराबाई का स्मरण करके भारतीय महिलाओं के मुखमण्डल आज भी प्रसन्नता से जगमगा उठते हैं। श्रद्धा की साक्षात् मूर्ति मीराँ के अध्यात्म अनुभव* बड़े मूल्यवान् हैं।

शिवाजी ने इस बिखरी हुई शक्ति को एकत्र किया और स्वतन्त्रता की जो ध्वनि यहाँ-वहाँ सुनाई देती थी उसे उसने इसका मूल मन्त्र बना दिया।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—शिवाजी का व्यक्तित्व समझने के लिए हम अपने से क्या प्रश्न कर सकते हैं?

२—शिवाजी को क्या आन्तरिक स्फूर्ति हो गई थी? स्पष्ट समझाओ।

३—शिवाजी ने अपने कर्त्तव्य का क्या पालन किया? सतर्क वर्णन करो।

४—उक्त गद्य का उपयुक्त शीर्षक क्या हो सकता है?

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य का निष्कर्ष सरल भाषा में समझाओ।

२—रेखांकित पदों की व्याख्या करो।

३—'स्वतन्त्रता' के ऊपर एक लेख लिखो।

४—स्वतन्त्रता, घृणित, पूत—के विलोमशब्द लिखो।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों के सविग्रह समास लिखो।

२—प्रथम वाक्य का वाक्य विश्लेषण करो।

३—साथ, खर्तों, महत्त्व, किया करते थे, उसका—पद परिचय करो।

विषय-सम्बन्धी —

१—यदि शिवाजी उस समय न होता तो आजकल भारत की क्या दशा होती? स्पष्ट उल्लेख करो।

२—शिवाजी की ऐतिहासिक घटना का वर्णन करो।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—लाञ्छनों = दोषों। वश तन्तु = वश की डोरी। अवि-च्छिन्न = अटूट, लगातार। भक्तिस्रोतस्विनी = जिसके हृदय में भक्ति प्रकट होती है। मुख-मण्डल = मुँह।

भक्ति-स्रोतस्विनी मीराबाई ...... उठते हैं = भारतवर्ष की रहने वाली स्त्रियाँ मीराबाई के पवित्र गुणों को जो उनके हृदय में ईश्वर के प्रति थे, प्रकट करके अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक अपने को गौरवास्पद मानती हैं।

---

(१६)

द्रौपदी ने मन ही मन कहा—कठोर उपालम्भ द्वारा राजा युधिष्ठिर को उत्तेजित करने के लिए वह मौका बहुत अच्छा है। उसने सोचा कि ऐसे उपालम्भ को सुनकर युधिष्ठिर को अवश्य ही क्रोध आ जायगा और वे दुर्योधन आदि शत्रुओं से उनके द्वारा किये गये अपकारों का बदला लेने के लिए अवश्य ही तैयार हो जायँगे। वह बोली—"महाराज, आप राजा हैं। आप नीतिज्ञ हैं। आप विद्वान् हैं। आप समझदार हैं। मैं तो एक अज्ञ, दूसरे स्त्री हूँ। यदि मैं आपके सामने कोई हित की भी बात कहूँ, तो मेरा ऐसा कहना भी अनुचित* ही समझा जायगा। सम्भव है, उसे आप अपनी निन्दा तिरस्कार समझें। अतएव इस विषय में मुझे कुछ भी न बोलना चाहिए था। परन्तु क्या करूँ,

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—उशरा की जन्मभूमि कहाँ है ? स्पष्ट बतलाओ।

२—महाकवि माघ कहाँ पैदा हुए ?

३—किसके अध्यात्म अनुभव बड़े मूल्यवान् हैं।

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य का निष्कर्ष सरलभाषा में स्पष्ट करो।

२—रेखांकित पद-समूहों का स्पष्टीकरण करो।

३—'जन्मभूमि' अथवा 'श्रद्धा' पर एक संक्षिप्त लेख लिखो।

४—राजा शिवि, उशरा, महाकविमाघ, मीराबाई पर टिप्पणी दो।

५—जननी, जन्मभूमि, प्रसन्नता, श्रद्धा, स्मरण—के विलोम शब्द बतलाओ।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों के सविग्रह समास लिखो।

२—अन्तिम वाक्य का वाक्य विग्रह करो।

३—'अनेक' का बहुवचन क्या है ?

४—देवधाम, असम्भव, प्रसन्नता, श्रद्धा, साक्षात्—की शब्द निरुक्ति करो।

विषय सम्बन्धी —

१—उशरा कौन थी ? इसका कुछ वर्णन करो।

२—पद्मिनी और दुर्गावती के सम्बन्ध की ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख करो।

३—मीरांबाई की कविता के सम्बन्ध में तुम्हारी क्या राय है ? स्पष्ट बतलाओ।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों के सविग्रह समास बताओ।

२—अन्तिम वाक्य का वाक्य पृथक् करण करो।

३—द्वारा, विद्वान्, तिरस्कार, दुःसह, प्रार्थना का—पद परिचय करो।

विषय सम्बन्धी —

१—द्रौपदी का चीर हरण किसने किया? उस पर संक्षिप्त टिप्पणी दो।

२—द्रौपदी, युधिष्ठिर और दुर्योधन का संक्षिप्त वर्णन करो।

३—उक्त गद्यांश की शैली की विशेषता पर अपने विचार प्रकट करो।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—उपालम्भ = उलाहना। अपकार = निरादर। नीतिज्ञ = नय कोविद। मूल = मूल। तिरस्कार = अपमान। वस्त्रहरण = साड़ी का खींचा जाना, चीरहरण। केशाकर्षण = बालों का खींचना। विडम्बना = अपमान। क्षमा कर = अपराध पर दृष्टिपात न करें।

बिना बोले मुझ से रहा ही नहीं जाता । शत्रुओं ने वस्त्र हरण* और केशाकर्षण* आदि के रूप में मेरा जा विडम्बना की है, उसकी याद आते ही मुझे दु:सह दु:ख* होता है । वही दुःख मुझे बोलने के लिए प्रेरणा कर रहा है । अतएव मेरी प्रार्थना है कि आप मुझे इस उपालम्भ के लिए क्षमा करें ।”

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—द्रौपदी ने मन ही मन क्या सोचा ? स्पष्ट बतलाओ ।

२—द्रौपदी ने अपने लिए तथा युधिष्ठिर के लिए क्या विशेषण प्रयोग किये हैं ?

३—युधिष्ठिर से द्रौपदी किस प्रकार उपालम्भ करती है ? स्प[ष्ट] उल्लेख करो ।

४—उक्त गद्य का वर्णन किस समय का है ?

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य का निष्कर्ष अपनी बोली में अङ्कित करो ।

२—रेखांकित पदों की विस्तृत व्याख्या करो ।

३—'क्षमा' के ऊपर एक लेख लिखो ।

४—'मनही मन', 'निन्दा या तिरस्कार', 'विडम्बना'—को अपने वाक्यों में प्रयोग करो ।

५—अच्छा, राजा, स्त्री, निन्दा, दु:ख—के विलोमशब्द बतलाओ ।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—राजा की आँखें खुलने पर क्या दिखलाई दिया ?

२—सत्य ने राजा से क्या कहा ?

३—सत्य के कह चुकने पर क्या घटना प्रदर्शित हुई ?

४—उक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक क्या हो सकता है ?

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य का सार सरल भाषा में स्पष्ट करो।

२—रेखांकित पदों का स्पष्टीकरण करो।

३—'अभिमान' पर एक लेख लिखो।

४—ऊँची, काम, बिजली, पृथिवी, सपना—के तत्सम् स्वरूप लिखो।

५—आँख उठाई, 'अभिमान की पगड़ी बाँधना' 'टुकड़ा टुकड़ा होना', 'अड़अड़ाकर' 'औंधे मुँह आ पड़ना' 'सपना सपना हो जाना'—को अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

व्याकरण के लिए —

१—"उस अहंकार की आपड़ी"—वाक्य का वाक्य विग्रह करो।

२—पुष्पांकित शब्दों के सविग्रह समास लिखो।

३—पगड़ी, इसी, इतना, एक, चिल्लाया—का पदपरिचय करो।

राजा ने जो आँख उठाई, तो क्या देखता है कि वहाँ उस वही ऊँची वेदी पर उसी की मूर्ति पत्थर की खड़ी हुई रक्खी है और अभिमान की पगड़ी बाँधे हुए है। सत्य ने कहा कि "मूर्ख, तूने जो काम किए केवल अपनी प्रतिष्ठा के लिये। इसी प्रतिष्ठा के प्राप्त होने की तेरी भावना रही है। और इसी प्रतिष्ठा के लिए तूने अपनी आप पूजा की। रे मूर्ख, सकल-जगत्स्वामी* घट घट अन्तर्यामी क्या ऐसे मन रूपी मन्दिरों में भी अपना सिंहासन बिछने देता है, जो अभिमान और प्रतिष्ठा प्राप्ति* की इच्छा इत्यादि से भरा पड़ा है? यह तो उसकी बिजली पड़ने के योग्य है"। सत्य का इतना कहना था कि सारी पृथिवी एक बारगी काँप उठी, मानों उसी दम टुकड़ा टुकड़ा* हुआ चाहती थी, आकाश में ऐसा शब्द हुआ कि जैसे प्रलय काल का मेघ गरजा। मन्दिर की दीवारें चारों ओर से अड़अड़ा कर गिर पड़ीं, मानों उस पापी राजा को दबा ही लेना चाहती थीं। उस अहंकार की मूर्ति पर एक ऐसी बिजली गिरी कि वह धरती पर औंधे मुँह आ पड़ी। 'त्राहि माम्, त्राहि माम्, मैं डूबा' कहके भोज जो चिल्लाया, तो आँख उसकी खुल गई और सपना सपना ही गया।

दूसरा अध्याय

विषय सम्बन्धी —

१—राजा भोज पर एक संक्षिप्त टिप्पणी दो।

२—उक्त गद्य की शैली पर अपने विचार प्रकट करो।

३—उपर्युक्त गद्य में किन किन अलंकारों की झलक आगई है? स्पष्ट समझाओ।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—बड़ी ऊँची वेदी पर = उच्चासन पर। मूर्ति = प्रतिमा। अभिमान की पगड़ी = अभिमान का साफा। सकल जगत् स्वामी = परमेश्वर से भाव है। घट घट अन्तर्यामी = सर्वव्यापी। गौरव = बड़ाई। बिजली पड़ने योग्य है = वज्रपात होना चाहिये। प्रलयकाल = कल्पान्त। मेघ = बादल। त्राहिमाम् = मुझे बचाओ। सपना हो गया = स्वप्न हो गया।

अपठित गद्यांश

कक्षा १० के लिए

(१)

अंगद—स्वामी ! वह देखिये, दोनों मुनि कुमार* आ रहे हैं। क्रोध से उनका शरीर लाल हो रहा है। भगवन् ! जान पड़ता है, इन वीर बालकों* से युद्ध करना ही पड़ेगा। राम—(आप ही आप) युद्ध क्या होगा, किस लिए होगा, किस दम पर होगा ! सीते ! मेरे शरीर में तुम शक्ति थी ! तुम्हारे बिना मैं शक्तिहीन हूँ। वीर बालकों ने पल मे चन्द्रकेतु, शत्रुघ्न, लक्ष्मण, भरत सरीखे वीरों के दाँत खट्टे कर दिये। अब राम की बाहुओं में क्या बल है कि इनसे युद्ध करें। हाय* राक्षसों के संहारक राम की तलवार जिस दिन एक तपस्वी पर चली, उसी दिन सारी शक्ति का अन्त हो गया ! (अङ्गद से) अङ्गद ! नहीं, हो सकता। मुनि बालकों को परास्त करने से क्या लाभ होगा ? यदि अश्वमेध के घोड़े को लेकर ही इन्हें शान्ति है तो दो।

(२)

पञ्चवटी* एक स्थान है। उसके समीप ही गोदावरी की स्वच्छधारा* प्रवाहित हो रही है। वृक्ष और लताएँ मानो गृह पर आये अतिथि के समान श्री रामचन्द्र जी का पुष्पों से स्वागत कर रही हैं। रङ्ग बिरंगे पक्षि समूह* अपने शब्दों से मानों सीता के पतिव्रत* धर्म का यशोगान कर रहे हैं। वहाँ के अकड़े हुए वृक्ष मानों इस बात को कह रहे हैं कि श्रीरामचन्द्रजी अपनी प्रतिज्ञा पर इसी प्रकार सर्वदा अटल रहते हैं। ऐसे सुन्दर और भावपूर्ण वन को देखकर रामचन्द्रजी अत्यन्त प्रसन्न हुए।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—पञ्चवटी को देखकर श्री रामचन्द्रजी क्यों प्रसन्न हुए ?

२—वृक्षलताएं, पक्षि-कूजित, वृक्षों की ऐंठ अकड़, इन सबमें लेखक ने क्या-क्या भाव निकाले हैं ?

३—पञ्चवटी की प्राकृतिक शोभा का उल्लेख करो।

४—उक्त गद्य के लिए एक भावपूर्ण शीर्षक बताओ।

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य का निष्कर्ष अपनी बोली में समझाओ।

२—रेखाङ्कित पदों का स्पष्टीकरण करो।

३—पञ्चवटी की प्राकृतिक शोभा पर एक संक्षिप्त लेख लिखो।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—अङ्गद ने राम से क्या कहा था ?

२—अङ्गद की वार्ता सुनकर राम ने क्या उत्तर दिया ?

३—उक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक क्या हो सकता है ?

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य का अर्थ केवल तीन पंक्तियों में अङ्कित करो।

२—रेखांकित पदों को स्पष्ट करो।

३—'लाल होना', 'दाँत खट्टे कर देना', 'सहायक'—को निज निर्मित वाक्यों में प्रयोग करो।

४—'अश्वमेध' पर एक संक्षिप्त लेख लिखो।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों का पदान्वय करो।

२—'मुनि कुमार' और 'अश्वमेध' के सविग्रह समास लिखो।

अलंकृत प्रश्न —

१—राम ने 'सीते' सम्बोधन करके क्यों पश्चात्ताप किया ?

२—राम ने क्या बात सोच कर अंगद से कहा कि मुनि-बालकों को परास्त करने में लाभ नहीं ?

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—मुनि-कुमार = यहाँ तात्पर्य लव और कुश से है। दाँत खट्टे कर दिये = अपने पराक्रम से शत्रु को नीचा दिखा दिया। बाहुओं में = भुजाओं में। परास्त करने से = हराने से। अश्वमेध = वह यज्ञ जिसमें दिग्विजय करने के लिए घोड़ा छोड़ा जाता है। यह एक साल उपरान्त घूम कर आ जाता है, तब इसका यज्ञ में बलिदान किया जाता है।

(२)

पञ्चवटी* एक स्थान है। उसके समीप ही गोदावरी की स्वच्छधारा* प्रवाहित हो रही है। वृक्ष और लताएँ मानो गृह पर आये अतिथि के समान श्री रामचन्द्र जी का पुष्पों से स्वागत कर रही हैं। रङ्ग बिरंगे पक्षि समूह* अपने शब्दों से मानो सीता के पतिव्रत* धर्म का यशोगान कर रहे हैं। वहाँ के अकडे हुए वृक्ष मानो इस बात को कह रहे हैं कि श्रीरामचन्द्रजी अपनी प्रतिज्ञा पर इसी प्रकार सर्वदा अटल रहते हैं। ऐसे सुन्दर और भावज्ञ वन को देखकर रामचन्द्रजी अत्यन्त प्रसन्न हुए।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—पञ्चवटी को देखकर श्री रामचन्द्रजी क्यों प्रसन्न हुए?

२—पुष्पलताएँ, पक्षि-कूजित, वृक्षों की ऐंठ अकड़, इन सबसे लेखक ने क्या-क्या भाव निकाले हैं?

३—पञ्चवटी की प्राकृतिक शोभा का उल्लेख करो।

४—उक्त गद्य के लिए एक भावपूर्ण शीर्षक बताओ।

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य का निष्कर्ष अपनी बोली में समझाओ।

२—रेखांकित पदों का स्पष्टीकरण करो।

३—पञ्चवटी की प्राकृतिक शोभा पर एक संक्षिप्त लेख लिखो।

४—'रमणीय', 'रंग बिरंगे', 'भावज्ञ'—को निजनिर्मित वाक्यों में प्रयोग करो।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों के सविग्रह समास लिखो।

२—'रमणीय', 'अरुड़े', 'भावज्ञ'—का पद परिचय करो।

अलंकृत प्रश्न —

१—श्री रामचन्द्र पञ्चवटी पर किस समय और क्यों ठहरे थे?

२—पञ्चवटी सम्बन्धी कोई घटना यदि स्मरण हो तो वर्णित करो।

३—उक्त गद्य में किस अलंकार की प्रधानता है? क्यों, स्पष्ट समझाओ।

सहायक शब्द:—

शब्दार्थ—प्रवाहित हो रही है = बह रही है। अतिथि = पाहुने। भावज्ञ = भावज्ञाता, मर्मज्ञ।

उपर्युक्त गद्यांश में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

(३)

जनक के कहने और विश्वामित्र® की आज्ञा से श्रीरामचन्द्रजी ने सहज ही मे उस धनुष को उठा लिया, जिसके हिलाने में भी पृथ्वी के सभी वीर हार मान चुके थे और फिर जब श्रीरामचन्द्रजी उसे झुकाकर ज्योंही उसकी प्रत्यञ्चा चढाने लगे त्यों ही वह कडकड़ाकर तड़ाके के साथ बीच से दो टूक हो गया। धनुष भग होते ही राजा जनक तथा रनिवास® की सब रानियो को बड़ा आनन्द हुआ, क्योंकि जब से श्रीरामचन्द्र जी जनकपुर® में आए थे, तब से उन्हें देखकर सबों की यही लालसा हुई थी कि किसी प्रकार श्रीजानकी जी का विवाह श्रीरामचन्द्र जी के साथ हो।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—रामचन्द्रजी ने धनुष को किस प्रकार तोड़ा ?

२—अयोध्यापुरी के नर नारियों पर धनुष भङ्ग का क्या प्रभाव पड़ा ?

३—मिथिला के नर नारी उस समय क्या चाह रहे थे ?

४—धनुष को पहिले किस किस ने तोड़ना चाहा था ?

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य का निष्कर्ष केवल तीन पंक्तियों में अङ्कित करो।

२—रेखांकित शब्दों की व्याख्या करो।

३—'जनक', 'विश्वामित्र', 'श्रीरामचन्द्र जी'—पर संक्षेप में टिप्पणी दो।

४—'सीताजी के स्वयंवर पर' एक लेख लिखो जो लगभग २० पंक्तियों का हो।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों के सविग्रह समास लिखो।

२—'धनुष', 'प्रत्यञ्चा', 'कड़कड़ाकर', 'टूक', 'लालसा'—शब्दों का पदान्वय करो।

विशेष प्रश्न —

१—राजा जनक ने धनुष यज्ञ क्यों किया था?

२—श्रीरामचन्द्रजी विश्वामित्र के साथ जनकपुर क्यों गये थे?

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—प्रत्यञ्चा = धनुष की डोरी। भंग होते ही = टूटते ही। लालसा = इच्छा।

(४)

नेपोलियन बचपन में बहुत दुर्बल॰ था और बाल-संग्रामों॰ में बहुधा उसे नीचा देखना पड़ता था। लेकिन पढ़ने लिखने॰ में बहुत तेज था। गणित से उसे विशेष प्रेम था। बड़े बड़े॰ विजेताओं के चरित्र पढ़ने की भी उसे रुचि थी। वह उनकी लड़ाइयों के नक़शे खींचता और सोचता कि एक दिन मैं भी इसी भाँति संसार को जीत कर अपना नाम अमर करूँगा। वह एक विद्यालय में प्रविष्ट हुआ। फ्रांस में जब राज्यक्रांति ज्वाला॰ धधकी, तब यह दुर्बल, साँवला, एक हरी का युवक सेना में लेफ़टिनेन्ट था। फ्रांसीसियों ने राजा को मार डाला और यूरोप के समस्त धारियों॰ के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करदी।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—नेपोलियन बचपन में कैसा था ?

२—नेपोलियन को किस किस से प्रेम ?

३—नेपोलियन की क्या भावना थी ?

४—वह कहाँ का रहने वाला था ?

तब फ्राँस की क्या दशा थी ?

वह सेना का लेफटिनेंट था

रचना के लिए —

१—उस गद्य का शीर्षक बतलाओ ?

२—उपर्युक्त गद्यांश का सरलार्थ अपनी बोली में वर्णित करो ।

३—रेखांकित पदों को स्पष्ट करो ।

४—'नीचा देखना पड़ा', 'अपना नाम अमर करना'—को अपने वाक्यों में प्रयोग करो ।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों के सविग्रह समास बताओ ।

२—'बचपन', 'विशेष', 'युवक'—इन शब्दों की शब्द निरुक्ति करो ।

विशेष प्रश्न —

१—नेपोलियन सेना में इतना शीघ्र क्योंकर लफटिनेन्ट हुआ ?

क शब्द —

विधार—विजेताओं = विजय प्राप्त पुरुषों, विजयी योद्धाओं । हुआ, (शिक्षा + आलय) मदर्सा, स्कूल । प्रविष्ट हुआ = दाखिल पकट । तिल । राज्य क्रान्ति — [illegible]विप्लव, राज्य में उलट

(५)

अवकाशाभाव* के बारे में हम कह सकते हैं, कि किसी व्यक्ति को यदि किसी विशेष कार्य के करने की उत्कट इच्छा हो, तो उसके लिए अवकाश अवश्य ही मिल जायगा। जब कुछ व्यसनी लोगों को दिनभर कठिन परिश्रम करके रात्रि में ताश या शतरंज खेलने का अवकाश मिल जाता है, तब कोई कारण नहीं कि एक चिट्ठी लिखने या कुछ संगीत सीखने या प्राणायाम करने या कोई धार्मिक या साहित्यिक पुस्तक के पढ़ने का अवकाश न मिल सके। आवश्यकता है उत्कट इच्छा और मन लगन* की। सत्संगति* का फल ही यह है कि उपादेय विषयों में सदिच्छा पैदा हो जाय। अब विद्यार्थी लोग तथा अन्य जन इस बात का निश्चय और दृढ़-संकल्प* कर लें, कि वे अपने अमूल्य समय का एक क्षण भी व्यर्थ न खोयेंगे, और यदि वे अधिक से अधिक ज्ञान (पुस्तकस्थ तथा व्यावहारिक) प्राप्त कर लेंगे, तो बिना किसी कठिनता के उनका मनोरथ सिद्ध हो जायगा।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—किसी विशेष कार्य को करने के लिए संकल्प की आवश्यकता

२—सत्संगति का क्या फल है ?

३—विद्यार्थियों का मनोरथ क्योंकर सिद्ध हो जाता है ?

४—उक्त गद्यांश का भावपूर्ण शीर्षक क्या हो सकता है ?

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य का निष्कर्ष अपनी भाषा में अङ्कित करो।

२—रेखाङ्कित पदों की विस्तृत व्याख्या करो।

३—'उत्कट', 'प्राणायाम' 'सदिच्छा' 'मनोरथ'—इन शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

४—'सत्संगति' पर एक लेख लिखो।

व्याकरण के लिए —

१—दुष्पाठित शब्दों के समास लिखो और विग्रह भी करो।

२—'व्यक्ति', 'अवश्य', 'मत', 'व्यर्थ' 'बिना'—इन शब्दों का पदान्वय करो।

विशेष प्रश्न—

१—'प्राणायाम' किसे कहते हैं ?

२—'ताश और शतरंज के खेलों में क्या अन्तर है ?

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—अवकाशाभाव = समय की कमी, अवसर न मिलना। उत्कट = तीव्र, अधिक। व्यसनी लोगों को = अभ्यासी पुरुषों को। प्राणायाम = योगाङ्ग विशेष, रेचक, पूरक और कुम्भक नामक प्राणों का दमन करने का उपाय। उपादेय = उत्तम, ग्रहण योग्य। दृढ़ सङ्कल्प = पक्का विचार, दृढ़ प्रण। मनोरथ = इच्छा, वासना।

---

(६)

स्कूल में हमने भी सारा भूगोल* और खगोल पढ़ डाला है। पर नर्क और बैकुण्ठ का पता कहीं नहीं पाया। किंतु भय और लालच को छोड़ दें तो बुरे कामों से घृणा और सत्कर्मों* से रुचि न रख कर भी तो अनिष्ट ही करेंगे। ऐसी बातें सोचने से गोस्वामी तुलसीदास जी का 'गो-गोचर* जहँ लगि मन जाई, सो सब माया जानेहु भाई,' और श्री सूरदास जी का 'माया मोहिनी मनहरन' कहना प्रत्यक्ष तथा सच्चा जान पड़ता है। फिर हम नहीं जानते कि धोखे को लोग क्यों बुरा समझते हैं? धोखा खाने वाला मूर्ख और धोखा देने वाला ठग क्यों कहलाता है? जब सब कुछ धोखा ही धोखा है, और धोखे से अलग रहना ईश्वर की भी सामर्थ्य से दूर है, तथा धोखे ही के कारण संसार का चर्खा पिन्न पिन्न* चला जाता है नहीं तो ढिचर ढिचर होने लगे, वरंच रही न जाय तो फिर इस शब्द का स्मरण वा श्रवण करते ही आपकी नाक भौंह* क्यों सकुड़ जाती है? इसके उत्तर में हम तो यही कहेंगे कि साधारणतः जो धोखा खाता है वह अपना कुछ न कुछ गँवा बैठता है और जो धोखा देता है उसकी एक न एक दिन कलई खुले बिना नहीं रहती है, और हानि सहना वा प्रतिष्ठा खोना दोनों बातें बुरी हैं, जो बहुधा इसके सम्बन्ध में हो ही जाया करती हैं।

प्रश्न

अभ्यास के लिये —

१—धोखे को लोग क्यों बुरा समझते हैं ?

२—जो मनुष्य धोखा खाता है उसका क्या हाल होता है ?

३—जो मनुष्य धोखा देता है उसकी क्या दशा हो जाती है ?

४—क्या यह सच है कि धोखे के ही कारण संसार का काम चल रहा है ? यह किस प्रकार—स्पष्ट बताओ ।

रचना के लिए —

१—उक्त पाठ का निष्कर्ष अपनी बोली में वर्णित करो ।

२—रेखांकित पदों का स्पष्टीकरण करो ।

३—'माया मोहिनी,' 'टिखर खिखर,' 'नाक-भौंह सिकुड़ना,' 'कलई खुलना'—इनको अपने वाक्यों में प्रयोग करो तथा अर्थ भी स्पष्ट करो ।

४—'धोखे' के ऊपर एक संक्षिप्त लेख लिखो ।

व्याकरण के लिए —

१—मुद्रांकित शब्दों के सविग्रह समास लिखो ।

२—'सच' 'वरच,' 'प्रतिष्ठा,' 'बहुधा'—इन शब्दों की शब्द निरुक्ति करो ।

विशेष प्रश्न —

१—'धोखे से अलग रहना ईश्वर की भी सामर्थ्य से दूर है' इसको सोदाहरण सिद्ध करो ।

२—क्या कोई महान् पुरुष धोखे में आया हो ? उसका उल्लेख करो ।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—खगोल = आकाश मण्डल । अथवा = और । अनिष्ट = बुरा, हानि । प्रत्यक्ष = साक्षात् ।

(७)

राजा नल की अद्‌भुत रूप राशि, गुणावलि*, बल, प्रभुत्व, दानशीलत्व आदि सुनकर विदर्भ देश के राजा भीम की कन्या दमयन्ती उस पर आसक्त हो गई। उसने अपने मन में यह प्रतिज्ञा की कि यदि मैं किसी के साथ विवाह करूँगी तो नल ही के साथ करूँगी। उधर एक हँस से दमयन्ती के रूपलावण्य* की प्रशंसा सुनकर नल भी उस पर मोहित हो गया। हँस ने दूतत्व किया और दमयन्ती के पास जाकर उसके नल विषयक* अनुराग को और भी बढ़ा दिया। उसने दमयन्ती से यह भी वायदा किया कि उपाय भर मैं तुम दोनों का विवाह करा दूँगा। हँस के चले जाने पर दमयन्ती दिन रात* नल का चिंतन करने लगी। वह बहुत कृश हो गई, खाना पीना* बहुत कुछ छूट गया, दुनियाँ की और सभी बातों से उसकी विरक्ति हो गई। वियोग विषयक कवि-समयसिद्ध* आपदाओं ने एक मात्र उसी का सहारा ले लिया। संसार में योग हो जाने पर वियोग की घटना होती है। पर श्रीहर्ष की सृष्टि में नल से योग होने के पहले ही दमयन्ती पर वियोग विपत्ति* के बादल फट पड़े। उसे उन्माद सा हो गया। वह विलाप करने और आकाश पाताल के कुलाबे मिलाने लगी। एक रात

को जो उस पाडुश्लोकाओं से पूर्ण, शिशिर वर्षा, शीतकर निचाई किये तो उसका दुःख दूना हो गया। उसने चन्द्रमा की बड़ी निन्दा की। पर राहु के लिए कहा—"बड़ा बहादुर है, बड़ा परम दुःख कातर है, पापी चन्द्रमा को खा जाता है। परोपकारमता हो तो राहु जैसा हो, वियोग विधुराओं को बचाने की बेचारा वही चेष्टा करता है।" इस प्रकार जब बहुत सुनते उसका स्मर-ताप-नामक मर्ज बहुत बढ़ गया तब वह अपनी दासी [illegible] सखी से बोली—

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—दमयन्ती नल के ऊपर आसक्त क्यों हुई ? और उसने अपने मन में क्या प्रतिज्ञा की ?

२—नल दमयन्ती के ऊपर क्योंकर मोहित हुआ ?

३—हँस ने क्या दूतत्व किया ? इसके चले जाने पर दमयन्ती की क्या दशा हुई ?

४—दमयन्ती ने राहु के लिए क्या कहा ?

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य का सरलार्थ अपनी बोली में प्रकट करो।

२—रेखांकित पदों का स्पष्टीकरण करो।

३—नल और दमयन्ती पर संक्षिप्त टिप्पणी दो।

४—'आसक्त होना', 'मोहित होना', 'आकाश पाताल के कुलाबे मिलाना'—इनको अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

५—'चन्द्रमा' के ऊपर एक लेख लिखो जो १५ पंक्तियों का हो।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों के सविग्रह समास लिखो।

२—'प्रचुर', 'उधर', 'बहादुर' 'परम', 'नव'—इन शब्दों का पदान्वय करो।

३—"हँस वे चले   करने लगीं"—इस वाक्य का वाक्य-पृथक्करण करो।

विशेष प्रश्न —

१—दमयन्ती ने चन्द्रमा की क्यों निन्दा की?

२—राहु चन्द्रमा का क्यों बैरी है? इस कथा का उल्लेख करो।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—रूपलावण्य = स्वरूप की सुन्दरता। अनुराग = प्रेम। कृश = दुबली-पतली। विरक्ति हो गई = संसार से वैराग्य होगया। उन्माद = पागलपन। षोडश = सोलह। शीतकर = चन्द्रमा। वियोग विधुराओं को = वियोग से सताये हुओं को। चेष्टा = प्रयत्न, उद्योग। स्मर ताप = कामदेव की अग्नि अर्थात् कामदेव का सताना।

---

(८)

यूरप के लोगों में बात करने का हुनर है। "आर्ट ऑफ कनवरसेशन" यहाँ तक बढ़ा है कि स्पीच और लेख दोनों इसे नहीं पाते। इसकी पूर्ण शोभा काव्यकला प्रवीण विद्वमण्डली* में है। ऐसे चतुराई के प्रसंग छेड़े जाते हैं कि जिन्हें सुन कान को अत्यन्त सुख मिलता है। सुहृद् गोष्ठी इसी का नाम है। सुहृद् गोष्ठी* की बातचीत की यह तारीफ है कि बात करने वालों की लियाकत अथवा पण्डिताई का अभिमान या कपट कहीं एक बात में न प्रकट हो वरन् क्रम रसाभास पैदा करने वाले सभों के बरकते हुए चतुर सयाने अपनी बातचीत को क्रमस रखते हैं। यह हमारे आधुनिक शुष्क पण्डितों की बातचीत में जिसे शास्त्रार्थ कहते हैं, कभी आवेगा ही नहीं। मुर्गे और बटेर की लड़ाइयों की झपटा झपटी के समान उनकी नीरस काँव काँव में सरस सलाप की तो चर्चा ही चलाना व्यर्थ है, वरन् कपट और एक दूसरे को अपने पांडित्य के प्रकाश से वाद में परास्त करने का संघर्ष आदि रसाभास* की सामग्री वहाँ बहुतायत के साथ आपको मिलेगी। घण्टे भर तक काँव काँव करते रहेंगे तो कुछ न होगा। बड़ी बड़ी कंपनी और कारखाने आदि बड़े से बड़े काम इसी तरह पहले

दो चार दिली दोस्तों की बातचीत में ही शुरू किए गए। उपरांत बढ़ते बढ़ते यहाँ तक बढ़े कि हजारों मनुष्यों की उनसे जीविका चलने लगी और साल में लाखों की आमदनी होने लगी। पचीस वर्ष के ऊपर वालों की बातचीत अवश्य ही कुछ न कुछ सारगर्भित होगी, अनुभव और दूरदेशी से खाली न होगा और पचीस से नीचे की बातचीत में यद्यपि अनुभव, दूरदर्शिता और गौरव नहीं पाया जाता पर इसमें इस प्रकार का ऐसा चिलबहलाव और ताजगी रहती है जिसकी मिठास उससे दस गुना बढ़ी चढ़ी है।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—सुहृद गोष्ठी किसे कहते हैं? इसकी बातचीत की क्या तारीफ है।

२—"आर्ट ऑफ कनवरसेशन" किसे कहते हैं? यह कहाँ के लोगों में पाया जाता है?

३—पचीस वर्ष के ऊपर और पचास से नीचे वालों की बातचीत कैसी होती है? स्पष्ट समझाओ।

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य का उपयुक्त शीर्षक क्या हो सकता है?

२—उपर्युक्त गद्य का निष्कर्ष पाँच पंक्तियों में अंकित करो।

३—रेखांकित पदों का स्पष्टीकरण करो।

४— [illegible] पर एक संक्षिप्त लेख लिखो।

(८)

यूरप के लोगों में बात करने का हुनर है। "आर्ट ऑफ कनवरसेशन" यहाँ तक बढ़ा है कि स्पीच और लेख भी इसे नहीं पाते। इसकी पूर्ण शोभा काव्यकला प्रवीण विद्वन्मण्डली* में है। ऐसे चतुराई के प्रसंग छेड़े जाते हैं कि जिन्हें सुन कान को अत्यन्त सुख मिलता है। सुहृद् गोष्ठी इसी का नाम है। सुहृद् गोष्ठी* की बातचीत की यह तारीफ है कि बात करने वालों की लियाकत अथवा पण्डिताई का अभिमान या कपट कहीं एक बात में न प्रकट हो वरन् क्रम रसाभास पैदा करने वाले सभी के वरकते हुए चतुर सयाने अपनी बातचीत को अक्रम रखते हैं। वह हमारे आधुनिक शुष्क पण्डितों की बातचीत में जिसे शास्त्रार्थ कहते हैं, कभी आवेगा ही नहीं। मुर्गे और बटेर की लड़ाइयों की झपटा झपटी के समान इनकी नीरस काँव काँव में सरस सलाप की तो चर्चा ही चलाना व्यर्थ है, वरन् कपट और एक दूसरे को अपने पांडित्य के प्रकाश से वाद में परास्त करने का संघर्ष आदि रसाभास* की सामग्री वहाँ बहुतायत के साथ आपको मिलेगी। घण्टे भर तक काँव काँव करते रहेंगे तो कुछ न होगा। बड़ी बड़ी कम्पनी और कारखाने आदि बड़े से बड़े काम इसी तरह पहले

दो चार मित्रों दोस्तों की बातचीत से ही शुरू किए गए। उपरान्त बढ़ते बढ़ते यहाँ तक बढ़ कि हजारों मनुष्यों की उनसे जीविका चलने लगी और साल में लाखों की आमदनी होने लगी। पचीस वर्ष के ऊपर वालों की बातचीत अवश्य ही कुछ न कुछ सारगर्भित होगी, अनुभव और दूरदेशी से खाली न होगी और पचास से नीचे की बातचीत में यद्यपि अनुभव, दूरदर्शिता और गौरव नहीं पाया जाता पर इसमें इस प्रकार का ऐसा दिलबहलाव और ताजगी रहती है जिसकी मिठास उससे दस गुना चढ़ी बढ़ी है।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—सुहृद-गोष्ठी किसे कहते हैं ? इसकी बातचीत की क्या तारीफ है।

२—"आर्ट ऑफ कनवरसेशन" किसे कहते हैं ? यह कहाँ के लोगों में पाया जाता है ?

३—पचीस वर्ष के ऊपर और पचीस से नीचे वालों की बातचीत कैसी होती है ? स्पष्ट समझाओ।

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य का उपयुक्त शीर्षक क्या हो सकता है ?

२—उपर्युक्त गद्य का निष्कर्ष पाँच पंक्तियों में अंकित करो।

३—रेखांकित पदों का स्पष्टीकरण करो।

४—'बातचीत' पर एक संक्षिप्त लेख लिखो।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पाङ्कित शब्दों के सविग्रह समास लिखो।

२—नीरस, चतुर, सयाने विशेषणों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाओ।

३—चतुराई, सहृदयता, अनुभव, दसगुना का पद-परिचय करो।

४—उक्त गद्य में से वर्तमान काल की क्रियाएँ चुनो।

विषय सम्बन्धी —

१—'मुर्ग और बटेर की लड़ाइयों की झपटा झपटी के समान से' लेखक का क्या आशय है? स्पष्ट बतलाओ।

२—ग्राह्य और त्याज्य किसे कहते हैं? प्रत्येक की व्याख्या करो।

३—उक्त गद्य की आलोचना करते हुए अपने विचार प्रकट करो कि यह गद्य की शैली कैसी है?

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—रसाभास = रस में भंग। सारगर्भित = सारयुक्त, अर्थ संयुक्त। दिल बहलाव = मनोरंजन। अनुभव = ज्ञान। दूरदेशी = विवेकपूर्ण। दूरदर्शिता = विवेकता। सलाप = बातचीत, सम्भाषण। ताजगी = नवीनता।

(६)

नारंगी रस में जाफरानी बसती बूटी छान कर शिवशम्भु शर्मा खटिया पर पड़े मौजों का आनन्द ले रहे थे। खयाली घोड़ों की बागें ढीली कर दी थीं। वह मनमानी जकड़ें भर रहा था। हाथ पाँव॰ को भी स्वाधीनता दी गई थी। वे खटिया के तूल अरज॰ की सीमा उल्लघन करके इधर उधर॰ निकल गये थे। कुछ देर इसी प्रकार शर्माजी का शरीर खटिया पर था और ख्याल दूसरी दुनिया में। अचानक एक सुरीली गाने की आवाज ने चौंका दिया। कन रसिया॰ शिवशम्भु खटिया पर उठ बैठे। कान लगा कर सुनने लगे। कानों में यह मधुर गीत बार बार॰ अमृत ढालने लगा। "चलो चलो आज खेलें होली, कन्हैया घर।" कमरे से निकल कर बरामदे में खड़े हुए। मालूम हुआ कि पड़ोस में किसी अमीर के यहाँ गाने बजाने॰ की महफिल हो रही है कोई सुरीली लय से उक्त होली गा रहा है। साथ ही देखा, बादल घिरे हुए हैं, बिजली चमक रही है, रिमझिम झड़ी लगी हुई है। वसन्त में सावन देखकर अकल जरा चक्कर में पड़ी। विचारने लगे कि गाने वाले को मलार गाना चाहिये था, न कि होली। साथ ही खयाल आया कि फागुन सुदी है, वसन्त के विकास का समय है, वह होली क्यों न गावे। इसमें तो गाने वाले

का नहीं, विधि की भूल है जिसने वसन्त में सावन बना लिया है। कहां तो चाँदनी छिटकी होती, निर्मल वायु बहती, कोयल की कूक सुनाई देती, कहाँ भादों की सी अँधियारी है, वर्षा की झड़ी लगी हुई है। आह! कैसा ऋतु विपर्यय* है।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—शिवशम्भु शर्मा किस नशे में मस्त थे?

२—शर्मा जी के कान में क्या सुनाई पड़ा? उन्होंने उसकी शंका कैसे समाधान की, स्पष्ट बतलाओ।

३—'होली' किसे कहते हैं? यह किस अवसर पर गाई जाती है?

रचना के लिए —

१—उक्त गद्यांश का संक्षेपार्थ सरल भाषा में लिखो।

२—पुष्पांकित पदों की विशद् व्याख्या करो।

३—'वसन्त ऋतु' पर एक लेख लिखो।

४—नाफरानी, ख़याली, दुनियाँ, बिजली के शुद्ध हिन्दी शब्द बताओ।

५—चौंका दिया, उल्लंघन, अक्ल, नशा चक्कर में पड़ना, विधि की भूल तथा निर्मल वायु को वाक्यों में प्रयोग करो।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों के सविग्रह समास लिखो।

२—प्रथम वाक्य का वाक्य विश्लेषण करो।

३—खटिया, खयाल, विधि, अँधियारी का पदान्वय करो।

विशेष प्रश्न —

१—भग के नशे में मनुष्य की क्या दशा हो जाती है, आपकी सम्मति में नशा करना कैसा है ?

२—बसन्तकाल की प्राकृतिक शोभा का वर्णन करो।

३—'होली' फागुन के ही मास में क्या गाते हैं ? व्याख्या करो।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—जाफरानी = केशरिया रंग की। शिवशम्भु के नाम से इन्होंने भारत मित्र में कई चिट्ठियाँ छपाई थीं जिनका संग्रह शिवशम्भु के चिट्ठे में किया गया है। बाग = लगाम। जकन्द = छलाँग। तूल अरज = लम्बाई चौड़ाई। कन रसिया = सुनने के रसिक। विपर्यय = उलट-पलट।

---

(१०)

वक्ता महाशय वक्तृता देने को उठ खड़े हुए हैं। अपनी पण्डिताई दिखाने के लिये सब शास्त्रों की बात थोड़ी बहुत* कहनी चाहिए। पर शास्त्र का जानना तो अलग रहा, उन्हें किसी शास्त्र का पन्ना भी उलटने का सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ। इधर उधर से सुनकर दो एक शास्त्रों और शास्त्रकारों का नाम भर जान लिया है। कहने को तो खड़े हुए हैं, पर कहें क्या? अब लगे चिन्ता के समुद्र में डूबने उतराने*, और मुँह पर रूमाल दिए खाँसते खूँसते* इधर उधर ताकने। दो चार* बूँद पानी भी उनके मुखमंडल पर झलकने लगा। जो मुख कमल* पहले उत्साह सूर्य की किरणों से खिल उठा था, अब ग्लानि और संकोच का पाला पड़ने से मुरझाने लगा। उनकी ऐसी दशा देख हृदय दया से उमड़ आया। उस समय मैं बिना बुलाए, उनकी सहायता के लिये जा खड़ा हुआ, और मैंने उनके कानों में चुपके से कहा—"महाशय कुछ परवा नहीं, आपकी मदद के लिये मैं हूँ। आपके जी में जो आवे आरम्भ कीजिए, फिर तो मैं सब कुछ निबाह लूँगा।" मेरे ढाढ़स बँधाने पर बेचारे वक्ताजी के जी में जी आया। उनका मन फिर ज्यों का त्यों हरा भरा हो उठा। थोड़ी देर के लिये जो

उनके मुखड़े के आकाश-मंडल* में चिंता विहग* का बादल देख पड़ा था, वह मेरे ढाढ़स के झकोरे से एक बारगी फट गया, और उत्साह का सूर्य फिर निकल आया। अब लगे ये यों वक्तृता झाड़ने—"महाशयो, मनु इत्यादि धर्मशास्त्रकार, व्यास इत्यादि पुराणकार, कपिल इत्यादि दर्शनकारों ने कर्मवाद, पुनर्जन्मवाद इत्यादि जिन जिन दार्शनिक तत्त्व-रत्नों का भारत के भंडार में भरा है, उन्हें देखकर मैक्समूलर इत्यादि पाश्चात्य पण्डित लोग बड़े अचम्भे में आकर चुप हो जाते हैं। इत्यादि, इत्यादि।"

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—वक्ता महाशय की शास्त्रों के प्रति योग्यता का बयान करो।

२—शास्त्र और पुराण किसे कहते हैं?

३—मैक्समूलर के विषय में क्या जानते हो?

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य का सारांश अपनी बोली में लिखो।

२—रेखांकित पदों का स्पष्टीकरण करो।

३—'चिन्ता' के ऊपर एक लेख लिखो।

४—'हृदय दया से उमड़ आई', 'जी में जी आया', 'हरा भरा हो उठा' से क्या भाव समझते हो? वाक्यों में प्रयोग करो।

(१०)

वक्ता महाशय वक्तृता देने को उठ खड़े हुए हैं
अपनी पण्डिताई दिखाने के लिये सब शास्त्रों की
थोड़ी बहुत* कहनी चाहिए। पर शास्त्र का जानना
अलग रहा, उन्हें किसी शास्त्र का पन्ना भी उलटने
सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ। इधर उधर से सुनकर
एक शास्त्रों और शास्त्रकारों का नाम भर जान लि
है। कहने को तो खड़े हुए हैं, पर कहें क्या
अब लगे चिन्ता के समुद्र में डूबने उतराने* ,
मुँह पर रूमाल दिए खाँसते-खूँसते* इधर-उधर ताक
दो-चार* बूँद पानी भी उनके मुखमंडल पर झल
लगा। जो मुख कमल* पहले उत्साह सूर्य की किरणों
खिल उठा था, अब ग्लानि और संकोच का पाला प
से मुरझाने लगा। उनकी ऐसी दशा देख हृदय दया
उमड़ आया। उस समय मैं बिना बुलाए, उनकी सहा
के लिये आ खड़ा हुआ, और मैंने उनके कानों में चु
से कहा—"महाशय कुछ परवा नहीं, आपकी मदद
लिये मैं हूँ। आपके जी में जो आवे आरम्भ कीजि
फिर तो मैं सब कुछ निबाह लूँगा।" मेरे ढाढ़स बँ
पर बेचारे वक्ताजी के जी में जी आया। उनका मन
ज्यों का त्यों हरा भरा हो उठा। थोड़ी देर के लिये

(११)

हे लक्ष्मण ! मधुर वाक्य से स्नेह-युक्त सुग्रीव के वाणी विशारद॰ सचिव हनूमान से भाषण कर, यह ज्ञात हुआ कि ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद के न जानने वाले इस प्रकार का भाषण नहीं कर सकते अर्थात ये वेद शास्त्रज्ञ जान पड़ते हैं। निश्चय ही इन्होंने व्याकरण का अच्छा अध्ययन किया है। कारण यह है कि इन्होंने इतना अधिक बोलने पर भी एक अशुद्धि नहीं की। मुख में, नेत्रों में और भ्रू-भाग॰ में तथा अन्य किसी भी अवयव में इनके कहीं भी दोष नहीं दिखाई पड़ा। सूक्ष्मरीति से स्पष्ट-स्पष्ट॰, अस्खलित, श्रुति-मधुर॰, न तो बहुत धीरे धीरे और न बहुत ज़ोर ज़ोर से अर्थात् मध्यम स्वर में इन्होंने भाषण किया है। सुसंस्कृत, नियमयुक्त, अद्भुत प्रकार से प्रिय तथा हृदय को हर्षित करने वाली वाणी इनके मुख से उच्चरित हुई है।

प्रश्न

अभ्यास के लिये —

१—हनूमान से भाषण करके क्या ज्ञात हो गया ? स्पष्ट उल्लेख करो।

२—हनूमानजी का व्याकरण ज्ञान किस प्रकार ज्ञात हुआ ? स्पष्ट समझाओ।

३—सुग्रीव कौन था ?

४—'मनु', 'व्यास', 'कपिल' पर संक्षिप्त टिप्पणी दो।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पाङ्कित शब्दों के सविग्रह समास लिखो।

२—पण्डिताई सूँद, दो-एक, का—पदान्वय करो।

३—प्रथम वाक्य का वाक्य पृथक्करण करो।

विषय सम्बन्धी —

१—उक्त गद्यांश की भाषा की शैली पर आलोचना करते हुए अपनी सम्मति प्रकट करो।

२—उपर्युक्त गद्य में कौन अलंकार, कहाँ पर आया है? स्पष्ट समझाओ।

सहायक शब्द .—

शब्दार्थ—वक्ता = व्याख्यान देने वाला। दो चार बूँदें लगा = उसके चेहरे पर दो चार पसीने की बूँदें भी आगईं। ग्लानि = घृणा। सकोच = लज्जा। साहस = धैर्य। वक्तृता = व्याख्यान। भण्डार = खज़ाना, कोष। पाश्चात्य = पश्चिम के यूरप के। कर्मवाद = कर्म सम्भाषण, क्रिया-कर्म की बातचीत। पुनर्जन्मवाद = दूसरे जन्म की बातचीत।

---

(११)

हे लक्ष्मण ! मधुर वाक्य से स्नेह-युक्त सुग्रीव के वाणी विशारद॰ सचिव हनूमान से भाषण कर, यह ज्ञात हुआ कि ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद के न जानने वाले इस प्रकार का भाषण नहीं कर सकते अर्थात् ये वेद शास्त्रज्ञ जान पड़ते हैं। निश्चय ही इन्होंने व्याकरण का अच्छा अध्ययन किया है। कारण यह है कि इन्होंने इतना अधिक बोलने पर भी एक अशुद्धि नहीं की। मुख मे, नेत्र मे और भ्रू भाग॰ में तथा अन्य किसी भी अवयव में इनके कहीं भी दोष नहीं दिखाई पड़ा। सूक्ष्मरीति से स्पष्ट-स्पष्ट॰, अस्खलित, श्रुति मधुर॰, न तो बहुत धीरे धीरे और न बहुत जोर जोर से अर्थात् मध्यम स्वर में उन्होंने भाषण किया है। सुसस्कृत, नियमयुक्त, अद्भुत प्रकार से प्रिय तथा हृदय को हर्षित करने वाली वाणी इनके मुख से उच्चरित हुई है।

प्रश्न

अभ्यास के लिये :—

१—हनूमान से भाषण करके क्या ज्ञात हो गया ? स्पष्ट उल्लेख करो।

२—हनूमानजी का व्याकरण ज्ञान किस प्रकार ज्ञात हुआ ? स्पष्ट समझाओ।

३—सुग्रीव कौन था ?

रचना के लिए —

१—उक्त गद्यांश का निष्कर्ष सरल भाषा में स्पष्ट करो।

२—रेखांकित शब्द समूहों की विशद् व्याख्या करो।

३—'व्याकरण' पर एक संक्षिप्त लेख लिखो।

४—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और हनूमान पर टिप्पणी दो।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों के सविग्रह समास लिखो।

२—उक्त गद्य में से विभक्तियाँ चुनो।

३—निश्चय, जोर-जोर, अशुद्धि, जान पड़ते हैं,—पद परिचय करो।

विषय-सम्बन्धी —

१—उक्त गद्य का प्रसँग क्या है?

२—वेद और शास्त्र कितने हैं? पृथक्-पृथक् बतलाओ।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—वाणी विशारद = बोलने में चतुर, चतुरवक्ता। अध्ययन किया है = पढ़ा है। भ्रू भाग में भौंहों में। अवयव = टुकड़े, अङ्ग प्रति अङ्ग। भाष्य = व्याख्यान। उच्चरित हुई = निकली है, कही है।

(१२)

मनुष्य-जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य है। सुख शान्ति के साथ परमानन्द* परमात्मा को प्राप्त करना, और इसे साधने वाला सबसे बड़ा कर्म है—संयम शील ब्रह्मचर्य। बस इसी उद्देश्य की प्राप्ति और इसी कर्म के करने के लिए वैदिक काल से प्रयत्न होता आ रहा हैं। मनुष्य-जाति के विविधि मत-मतान्तरों के धर्म ग्रन्थो का सार तत्त्व भी यही है। संसार में सब धर्मों के ऋषि-मुनियों ने भी अपने जीवन में इसीके लिये प्रयत्न किया है। मनुष्य जीवन का उद्देश्य, क्षणिक और कृत्रिम सुख नहीं जो कि विषयोपभोग से मिलता है वह तो पशुओं—नहीं, नहीं—राक्षसों का उद्देश्य और कर्म है। वास्तव में मनुष्य के गुण—सत्यनिष्ठा, शील, बल, विद्या, सदाचरण, परोपकार, साहस, तेज, उत्साह, धैर्य, जीव-दया, विश्व प्रेम*, भ्रातृ भाव तथा सत्सुधार आदि हैं। कायरता, द्वेष, दम्भ, असत्य, कलह, निन्दा, विवाद, हठ, अपकार, अन्याय, रुग्णता, भय, इन्द्रिय-लालुपता, असहिष्णुता तथा क्रोध आदि तो दुर्गुण* ही कहे जाँयगे। गुणो के द्वारा ही सत्कर्म करके सदुद्देश्य की सिद्धि हो सकती है। दुर्गुणों के वशीभूत होने से तो दुष्कर्म और पतन होता है। ब्रह्मचर्य के पालन में में स्थायी सुख और सद्गुण वास करते हैं। विषय भोग

तो क्षणिक आनन्द (जिसका फल दुःख होता है) और दुर्गुणों का घर है। एक अमृत-फल* है तो दूसरा विष फल*। पहले के चखने का परिणाम "जीवन" और दूसरे का 'मरण' है। पहला स्वर्ग और दूसरा नरक भेजने वाला है।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—मनुष्य-जीवन का उद्देश्य क्या है ? स्पष्ट समझाओ।

२—मनुष्य-जीवन के उद्देश्य तक पहुँचने के लिए फिर क्या उद्योग करना चाहिए ?

३—सदुद्देश्य की सिद्धि किस प्रकार हो सकती है ?

४—उक्त गद्य का उपयुक्त शीर्षक क्या हो सकता है ?

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य का निष्कर्ष पाँच पंक्तियों में अङ्कित करो।

२—रेखाङ्कित शब्दों तथा पदों की विशद् व्याख्या करो।

३—'परोपकार' पर एक लेख लिखो जो कि २२ पंक्तियों का हो।

४—मत-मतान्तरों, विश्वप्रेम, इन्द्रिय-लोलुपता, असहिष्णुता, वशीभूत—का क्या तात्पर्य है तथा वाक्यों में प्रयोग करो।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों के सविग्रह समास लिखो।

२—परमानन्द, परमात्मा, सदुद्देश्य, दुर्गुणों, सदाचार की सन्धियाँ तोड़ो तथा यह भी बतलाओ कि यह किन किन नियमों से सन्धियाँ हुई है।

३—विविध, रुग्णता, मिलता है, घर, द्वारा—की शब्द निरुक्ति करो।

४—'संसार में सब धर्मों प्रयत्न किया है। वाक्य का पृथक्करण करो।

५—'पतन होता है' क्रिया का क्या अर्थ है? इसकी पर्य्याय वाची दो क्रियाएँ और बताओ।

विषय सम्बन्धी —

१—ब्रह्मचर्य पालन करना मनुष्य के लिए क्यों आवश्यक है?

२—'ब्रह्मचर्य बल का ख़ज़ाना है' इसकी सोदाहरण पुष्टि करो।

३—किसी दो महान् पुरुषों पर जिन्होंने कि ब्रह्मचर्य धर्म पालन किया हो, टिप्पणी दो।

४—क्या गृहस्थी मनुष्य भी ब्रह्मचर्य से रह सकता है? इस पर अपने विचार प्रकट करो।

५—ब्रह्मचर्य किसे कहते है? स्पष्ट व्याख्या करो।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—वैदिककाल = वेदों का समय, प्राचीन समय। क्षणिक = थोड़े समय का, अल्पकाल। कृत्रिम = बनावटी। सत्यनिष्ठा = सत्य तत्परता, सत्य विश्वास। द्वेष = वैर। दम्भ = पाखंड। रुग्णता = बीमारी, अस्वस्थता। इन्द्रिय लोलुपता = इन्द्रियलोभी, कामी। कलह = लड़ाई। अपकार = निरादर, बुराई।

(१३)

हमेशा इस बात की कोशिश करते रहो कि तुम अपने को लोगों में वैसा ही जाहिर करो जैसा तुम वास्तव में भीतर से हो। नौजवानों में नुमाइश का आना उमर का तकाजा और उनकी नई नई उमंगों का एक अङ्ग समझा जाता है, पर उनका न आना बहुत बड़ा सौभाग्य* समझना चाहिये। जाहिरदारी या नुमाइश को दूर रख कर जो उमगें उठती हैं, वे नौजवानों के भविष्य जीवन में महोपकारी हो उसको महापुरुष* (Great man) बना देने में सहकारी होती हैं। इस प्रकार की उमगों से वह धीरे धीरे* चुपचाप अपने महत्त्व की आलीशान इमारत लगातार बनाता जाता है। कुँवार-कार्तिक* में जो शरत् कालीन बादल उठते हैं, वे जितना गरजते हैं, उतना बरसते नहीं। पर बरसात में जो बादल आते हैं, वे इतना गरजते नहीं, पर बरस के वसुधा को सब ओर से जलमग्न कर देते हैं। वैसा ही ओछे छिछोरे* तड़क भड़क बहुत दिखलाते हैं, पर करतूत बहुत कम उनमें देखी जाती है। किन्तु जो गुरुता-सम्पन्न* होते हैं, वे मुख से कुछ नहीं कहते, बल्कि करके दिखला देते हैं।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—कौनसी उमगें नौजवानों को महापुरुष बना देने में सहकारी हैं?

२—बरसात में बादल क्या करतूत दिखाते हैं ?

३—उक्त गद्य का उपयुक्त शीर्षक क्या हो सकता है ?

रचना के लिए —

१—रेखांकित पद-समूहों का स्पष्टीकरण करो।

२—उपर्युक्त गद्यांश का निष्कर्ष अपनी बोली में समझाओ।

३—हमेशा, कोशिश, जाहिर, नौजवानों और उमर के शुद्ध हिन्दी शब्द बताओ।

४—'बरसात' पर एक लेख लिखो जो २ पृष्ठ के हों।

५—'जितना गरजते हैं, उतना बरसते नहीं, लोकोक्ति का आशय वाक्य में प्रयोग करके दिखलाओ।

६—थोथे और छिछोरे में क्या अन्तर है? सोदाहरण स्पष्ट करो।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों के सविग्रह समास लिखो।

२—वास्तव, बादल, देखी जाती है, करतूत, वे—का पदान्वय करो।

३—'महोपकारी' में सन्धि विच्छेद करो तथा ऐसे ही पाँच उदाहरण और दीजिए।

४—निम्नलिखित वाक्यों में व्याकरण की क्या त्रुटियाँ हैं, स्पष्ट समझाओ।

(अ) देखो, बादल बरसात में बड़ी जोर से गरजती है।

(ब) नौजवानों में जुमादशा की आनी उमर की तकाजा और उसकी नई नई उमंगों का एक शह समझा जाती है।

(स) कुँवार कार्तिक में जो शरत्-कालीन बादल उठती हैं वह अधिक बरसते नहीं।

विषय-सम्बन्धी —

१—'नौजवानों की नई-नई उमगों का' कोई उदाहरण देकर दिग्दर्शन कराओ।

२—किसी 'महापुरुष' पर टिप्पणी करो।

सहायक शब्दः—

शब्दार्थ—नवजवानों में जुमायशा = नवयुवकों में जवानी आना। महत्त्व = गौरव। शरत्कालीन = शरद्‌ऋतु। वसुधा = पृथ्वी। करतूत = काम। गुरुता सम्पन्न = बड़प्पन से युक्त।

(१४)

यदि ध्यान-पूर्वक देखा जाय तो इस प्रकार के सैकड़ों हजारों महापुरुष मिलेंगे, जिन्होंने केवल अपने अध्यवसाय, और दृढ़निश्चय आत्मविश्वास के भरोसे ही संसार में असम्भव समझी जाने वाली सैकड़ों हजारों बातों को सम्भव कर दिखलाया और इस प्रकार सिद्ध कर दिया कि दृढ़ निश्चय और आत्मविश्वास के सामने संसार में कोई बात असम्भव नहीं है। कोई ऐसा आविष्कारक, कोई ऐसा धर्म प्रवर्तक, कोई ऐसा वीर, कोई ऐसा महापुरुष नहीं हुआ, जिसमे दृढ निश्चय और आत्मविश्वास न हो। सच तो यह है कि बिना इन दोनों बातों के मनुष्य में महत्व आ ही नहीं सकता। वह किसी प्रकार बड़ा बन ही नहीं सकता। यही बातें ऐसी हैं, जो अन्त में मनुष्य को पूर्ण सफल और विजयी बनाकर छोड़ती हैं। वास्तविक बात यह है कि महत्ता तो ईश्वर स्वय ही हम में भर देता है, पर उसपर उचित ध्यान नहीं देते और जबरदस्ती अपने आप में अयोग्यता का और तुच्छता आदि का आरोपण करके अयोग्य और तुच्छ बन जाते हैं। परन्तु यदि हम अपने विचारों को कुछ और प्रशस्त करें, अपनी दृष्टि कुछ और विस्तृत करें तो अनायास ही हम उन गुणों से अलंकृत से हो सकते हैं, जो किसी वीर

या महापुरुष* में पाये जाते हैं। यदि हम नीचे की ओर देखना छोड़कर ऊपर की ओर देखना आरम्भ करें तो अवश्य ही उस स्थान पर पहुँच सकते हैं, जहाँ महत्ता के सिवा और कुछ है ही नहीं।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—किन बातों के न होने से मनुष्य में महत्त्व नहीं आ सकता? स्पष्ट पुष्टि करो।

२—मनुष्य किसी वीर या महापुरुष के समान गुण किस प्रकार प्राप्त कर सकता है?

३—उक्त गद्य का उपयुक्त शीर्षक क्या हो सकता है?

रचना के लिए —

१—उपर्युक्त गद्यांश का निष्कर्ष सरल भाषा में स्पष्ट करो।

२—रेखांकित पदों की विस्तृत व्याख्या करो।

३—'आत्मविश्वास' पर एक संक्षेप लेख लिखो।

४—हजारों, नीचे, दोनों—के शुद्ध हिन्दी शब्द बनाओ।

५—'असम्भव को सम्भव कर दिखाना' का क्या तात्पर्य है? वाक्य में प्रयोग करके समझाओ।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों के सविग्रह समास लिखो।

२—मनुष्य, सफल, तुच्छ, वीर—से भाववाचक संज्ञाएँ बनाओ।

३—'वह किसी प्रकार बड़ा बन ही नहीं सकता' वाक्य विग्रह करो।

विषय-सम्बन्धी —

१—किसी आत्मविश्वासी वीर पुरुष पर घटित करके सिद्ध करो कि वह असम्भव बातों को भी सम्भव करके दिखला देता है।

२—किसी धर्म प्रवर्तक व्यक्ति पर सचित्र टिप्पणी करो।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—अध्यवसाय = लगातार परिश्रम। आविष्कारक = नई चीज ईजाद करने वाला। धर्मप्रवर्तक = धर्म चलाने वाला। अयोग्यता = नालायकी। तुच्छता = नीचता। आरोप करके = कल्पना करके, रख कर। प्रशस्त = सुन्दर, अति श्रेष्ठ। अनायास = अचानक। अलंकृत = विभूषित।

(१५)

सच्चा विद्यानुरागी* ज्ञान प्राप्ति का साधन इसलिये करेगा जिसमें वह अपना तथा दूसरों का हित साधन* कर सके। उसका मुख्य उद्देश्य उन शक्तियों की वृद्धि और परिष्कृति का साधन होना चाहिए जो उसे प्राप्त हैं। और उस साधन का मुख्य फल वह आनन्द होना चाहिए जो ज्ञान द्वारा प्राप्त होता है। ऐसे व्यक्ति को पढ़ने का लाभ मैं और क्या बतलाऊँ ? प्रसिद्ध अँगरेज़ विद्वान् बेकन का उपदेश है—"हमें खण्डन मण्डन* करने के लिये, विश्वास और स्वीकार करने के लिये, तरह तरह की बात करने के लिये, नहीं पढ़ना चाहिए।" आगे चलकर उसने पठन, वार्तालाप और लेखन का भेद समझाया है, कि पठन से पूर्णता और वार्तालाप से तत्परता और लेखन से यथार्थता आती है। इसी से वह कहता है—"यदि कोई मनुष्य थोड़ा लिखे तो समझना चाहिए कि उसे धारणा की आवश्यकता है यदि थोड़ा वार्तालाप करे तो समझना चाहिए कि उसमें उपस्थित बुद्धि का अभाव है, और यदि थोड़ा पढ़े तो समझना चाहिए कि उसे चतुराई और समझ की आवश्यकता है।" बातचीत और लिखना दोनों बहुत प्रयोजनीय हैं। बातचीत व्यवहार कुशल* पुरुषों के लिए प्रायः पुस्तक का काम देती है। पर विद्यानुरागी के लिए पढ़ना एक बड़ा भारी मन्त्र है जिसके प्रभाव से

चिर-काल का संचित ज्ञान भण्डार@ उसके सामने खुला पड़ता है, वह सब काल के पुरुषों का समकालीन हो जाता है, और सब जातियों के विचारों का आगार बन जाता है सैकड़ों पीढ़ियों के प्रयत्न का फल उसके हाथ में आ जाता है। यह प्रत्यक्ष है कि मनुष्यों के कर्मों की व्यवस्था ज्ञान से प्राप्त होती है, और ज्ञान वही श्रेष्ठ है जो अनेक विषयों से सम्बन्ध रखता है। ऐसे ज्ञान का द्वार अध्ययन है।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—सच्चा विद्यानुरागी ज्ञान प्राप्ति का साधन क्यों करता है? स्पष्ट बतलाओ।

२—अँगरेजी विद्वान् बेकन का क्या उपदेश है?

३—उक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक क्या हो सकता है?

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य का सरलार्थ सरल भाषा में स्पष्ट करो।

२—रेखांकित पदों का स्पष्टीकरण करो।

३—'वार्तालाप' पर एक लेख लिखो जो २ पृष्ठ का हो।

४—तत्परता, अभाव, प्रयोजनीय, संचित, व्यवस्था—को वाक्यों में प्रयोग करके अर्थ स्पष्ट करो।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों के सविग्रह समास लिखो।

२—प्रथम वाक्य का वाक्य विश्लेषण करो।

३—यथार्थता, अभाव, बन जाता है, प्रत्यक्ष, यही—की शब्द निरुक्ति करो।

विषय सम्बन्धी —

१—मनुष्य के लिए अध्ययन करना क्यों आवश्यक है? स्पष्ट व्याख्या करो।

२—क्या मनुष्य के लिए बातचीत और लिखना आवश्यक है? वह क्यों? स्पष्टतया समझाओ।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—विद्यानुरागी = विद्याव्यसनी। उद्देश्य = लक्ष्य। परिष्कृति = परिमार्जन। व्यक्ति = प्राणी। खण्डन-मण्डन = वाद विवाद। वार्तालाप = बातचीत। तत्परता = परायणता। यथार्थता = वास्तविकता। धारणा = स्मरण। प्रयोजनीय = आवश्यक। व्यवहार-कुशल = उद्योग निपुण। आगार = घर। समकालीन = उसी समय का रहने वाला। सैकड़ों पीढ़ियों फल = चिरप्रयास की सिद्धि। प्रत्यक्ष = स्पष्ट।

---

(१६)

भोज की पेशानी पर पसीना हो आया, उसने आँखें नीची करलीं, उस से जवाब कुछ न बन पड़ा। तीसरे पेड़ की बारी आई। सत्य का हाथ लगते ही उनकी भी वही हालत हुई। राजा अत्यन्त लज्जित हुआ। सत्य ने कहा कि "मूर्ख! ये तेरे तप के फल कदापि नहीं, इनको तो इस पेड़ पर तेरे अहंकार ने लगा रखा था। यह कौन सा व्रत व तीर्थ-यात्रा है जो तूने निरहंकार केवल ईश्वर की भक्ति और जीवों की दया से की हो? तू ने यह तप केवल इसी वास्ते किया कि जिस में तू अपने तईं औरों से अच्छा और बढ़ कर विचारे। ऐसे ही तप पर गोबर गनेस तू स्वर्ग मिलने की उम्मेद रखता है? पर यह तो बतला कि मन्दिर के उन मुंडेरों पर वे जानवर से क्या दिखलाई देते हैं, कैसे सुन्दर और प्यारे मालूम होते हैं, पर तो उनके पन्ने के हैं और गर्दन फ़ीरोज़े की, दुम में सारे किस्म के जवाहिरात जड़ दिये हैं।" राजा के जी में घमण्ड की चिड़िया ने फिर फुरीफुरी ली। मानों बुझते हुए दिए की तरह यह जगमगा उठा। जल्दी से उसने जवाब दिया कि "हे सत्य, यह तो कुछ तू मन्दिर के मुँडेरों पर देखता है मेरे मध्यावदन का प्रभाव है। मैं जो राता जाग जाग कर और माथा रगड़ते रगड़ते इ

मन्दिर की देहली को घिस कर ईश्वर की स्तुति-वंदना॰ और विनती प्रार्थना की है वे ही अब चिड़ियों की तरह पंख फैला कर आकाश को जाती हैं मानो ईश्वर के पास पहुँच कर अब मुझे स्वर्ग का राजा बनाती हैं।" सत्य ने कहा कि "राजा, दीनबन्धु॰ करुणाकर॰ श्रीजगन्नाथ जगदीश्वर॰ अपने भक्तों की विनती सदा सुनता रहता है। और जो मनुष्य शुद्ध हृदय और निष्कपट होकर नम्रता और श्रद्धा के साथ अपने दुष्कर्मों का पश्चात्ताप अथवा उनके क्षमा होने का कुछ भी निवेदन करता है, वह उसका निवेदन उसी दम सूर्य-चाँद॰ को बेधकर पार हो जाता है, फिर क्या कारण कि ये सब अबतक मन्दिर के मुँडेरे पर बैठे रहे ? आ चल देखें तो सही, हम लोगों के पास जाने पर आकाश को उड़ जाते हैं या उसी जगह पर परकटे कबूतरों की तरह फड़फड़ाया करते हैं।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—तीसरे पेड़ को फलों से लदा हुआ देख सत्य ने राजा से क्या कहा ?

२—मन्दिर के मुँडेरों पर जो जानवर से दिखाई दे रहे थे। उनके विषय में राजा ने सत्य से क्या कहा ?

३—मुँडेरों के जानवरों के सम्बन्ध में राजा की बात का सत्य ने किस प्रकार समर्थन किया ? स्पष्ट बतलाओ।

४—उक्त गद्य का शीर्षक क्या हो सकता है ?

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य का निष्कर्ष ८ पंक्तियों में स्पष्ट करो।

२—रेखांकित पदों का स्पष्टीकरण करो।

३—'अहंकार' के ऊपर एक लेख लिखिए।

४—आखें, तई, दिये, मन्दिर, गनेस—के तत्सम स्वरूप लिखो।

५—घमंड की चिड़िया, माथा रगड़ते रगड़ते, गोबर गनेस का तात्पर्य वाक्यों में प्रयोग करके समझाओ।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों के सविग्रह समास लिखो।

२—निरहंकार, जगन्नाथ, जगदीश्वर—का सन्धि विच्छेद करो तथा यह भी बतलाओ कि यह किन किन नियमों से सन्धियाँ हुई हैं।

३—पश्चात्ताप, पहुँच कर, औरों, सही का पद् परिचय करो।

४—"राजा के जी में ' फुरफुरी ली' वाक्य का वाक्य विग्रह करो।

विषय सम्बन्धी —

१—राजा भोज पर संक्षिप्त टिप्पणी दो।

२—उपर्युक्त गद्यशैलीपर आलोचना करते हुए अपने विचार प्रकट करो।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—पेशानीपर = मस्तक पर। अहंकार = घमंड। निरहंकार = घमण्डरहित। गोबर-गनेश = नितान्त अपदार्थ। घमंड की चिड़िया फुरफुरी ली = अहंकार फिर बढ़ आया। सन्ध्यावन्दन का फल है = सन्ध्योपासना का फल है ? जगन्नाथ = संसार का स्वामी। पश्चाताप = सोच। श्रद्धा = विश्वास, भक्ति। दुष्कर्म = बुरे काम। टुक = थोड़ी। सूर्यचाँद को भेदकर = सूर्य मंडल और चन्द्रमन्डल को पार करके।

(१७)

"महाराज ! प्रियतमा द्रौपदी ने बहुत ठीक कहा है। उसे सचमुच ही क्षत्रिय-कुल॰ का बड़ा अभिमान है। अतएव उसे ऐसा कहना ही चाहिये था। जो कुछ उसने कहा, बिना विचार किये ही नहीं कहा, खूब सोच विचार कर जैसी युक्ति-युक्त, जैसी सुन्दर और जैसी हितोपदेश पूर्ण बातें उसने कहीं वैसी वाचस्पति बृहस्पति से भी न कहते बनतीं। मैं तो यही कहूँगा कि उसका कथन सर्वथा माह्य है। "द्रौपदी यद्यपि स्त्री है, तथापि उसके भाषण से यही सूचित होता है कि वह नीति शास्त्र॰ के तत्त्वों से अच्छी तरह परिचित है। अतएव उसका कथन मेरी सम्मति में सर्वथा मानने योग्य है। द्रौपदी ने यद्यपि बहुत ही थोड़े शब्दों में अपना अभिप्राय प्रकट किया है, तथापि उसका भाषण स्वल्प होकर भी बहुत गुणकारी मालूम होता है। उसे मैं तो रामबाण॰ औषधि के सदृश समझता हूँ। औषधि जिस तरह परिणाम में सुख देने वाली होती है, वैसे ही द्रौपदी का भाषण भी परिणाम में सुख देने वाला है। औषधि जैसे उत्तम गुणों से युक्त होती है, द्रौपदी का भाषण वैसे ही गम्भीर अर्थों से युक्त है। औषधि जैसे कड़वी होती है, अतएव जैसे वह अच्छी नहीं लगती, द्रौपदी का भाषण भी वैसे ही पराक्रमहीनों

के लिए लाभदायक है। वह उन्हें अच्छा लगने योग्य नहीं, क्योंकि वह युद्ध के लिए उत्तेजना देनेवाले वाक्यों से लबालब भरा हुआ है। औषधि जैसे थोड़ी होती है, द्रौपदी का भाषण वैसे ही थोड़ा है। औषधि में जैसे आरोग्य और शक्तिवर्द्धन आदि अनेक गुण होते हैं, द्रौपदी के भाषण में भी वैसे ही शत्रु नाशकत्व और राज-लाभ आदि अनेक गुण हैं। अतएव उसका कहना सर्वथा ग्रहण करने योग्य है।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—द्रौपदी के भाषण की किस प्रकार प्रशंसा की है, स्पष्ट समझाओ।

२—भाषण की प्रशंसा का समर्थन किस प्रकार किया गया है ?

३—द्रौपदी के भाषण में कौन-कौन से गुण पाये जाते हैं ?

४—उक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक क्या हो सकता है ?

रचना के लिए —

१—उक्त गद्यांश का संक्षेपार्थ लिखो।

२—रेखांकित पदों की विशद् व्याख्या करो।

३—'युद्ध' पर एक लेख लिखो जो २५ पंक्तियों का हो।

४—सोच विचारकर, लबालब भरा हुआ, ग्रहण करने योग्य—को वाक्यों में प्रयोग करो।

४—उत्तम और अच्छा में क्या अन्तर है ? सोदाहरण समझाओ।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों के सविग्रह समास लिखो।

२—प्रथम वाक्य का वाक्य पृथक्-करण करो।

३—उक्त गद्य में से अव्यय शब्दों को चुनो तथा पदान्वय करो।

विषय सम्बन्धी —

१—द्रौपदी कौन थी ? टिप्पणी करो।

२—द्रौपदी ने यह भाषण किस समय दिया होगा ? स्पष्ट समझाओ।

३—उक्त गद्य में किस अलंकार की प्रधानता है ? स्पष्ट करो।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—प्रियतमा = प्राणाधिका। क्षत्रियकुल अभिमान है = राजवंश का पूर्ण गौरव है। ग्राह्य = ग्रहण करने योग्य। स्वल्प = थोड़ा। गम्भीर अर्थ से युक्त = अर्थ गौरव समन्वित। पराक्रमहीन = निर्बल।

नोट —उक्त गद्य में उपमा अलंकार है।

---

(१८)

सत्यनारायण की जीवनी करुण रस का एक दु खान्त महानाटक है। जिस प्रतिकूल परिस्थिति में उन्हे जीवन बिताना पड़ा और फिर जिस प्रकार उन्हें 'अनचाहत को सग' के हाथों तग आकर समय से पहले ही ससार से कूँच करने के लिए विवश होना पड़ा, उसका हाल पढ सुन कर किसी भी सहृदय को उनकी भाग्यहीनता पर दु ख और समवेदना हो सकती हैं। पर एक बात में सैकडों से वह बड़े ही सौभाग्यशाली सिद्ध हुए। गहन अन्धकार में भटकते को दीपक दीख गया, अपार* सागर मे थके हुए पछी को मस्तूल मिल गया, सत्यनारायण को मरने के बाद ही सही, 'चुपकी दाद देने वाला' एक 'भारतीय हृदय' मुर्दा हड्डियों मे जान डालने वाला—यश शरीर पर दया दिखाने वाला—एक 'मसीहा' मिल गया, जिसके कारण सत्यनारायण की स्वर्गीय सतप्त आत्मा अपने सांसारिक जीवन की समस्त दु खदायी दुर्घटनाओं को भूलकर सन्तोष की साँस ले सकती है, और अन्याय परलोकवासी* हिन्दी के वे अभागे कवि, लेखक, जिनका नाम भी यह कृतघ्न और स्वार्थी ससार भूल गया, सत्यनारायण की इस खुश नसीबी पर रश्क कर सकते हैं, इस सौभाग्यशालिता को

स्पृहा की दृष्टि से देख सकते हैं। यही नहीं, हिन्दी के अनेक जीवित लेखक और कवि भी, यदि उन्हें यह विश्वास हो जाय कि मुर्दों को जिन्दा करने वाला कोई ऐसा 'मसीहा' हमें भी मिल जायगा तो, सुखपूर्वक इस संसार से सदा के लिए विदा होने को उस लेडी की तरह तैयार हो जायँ, जिसने आगरे के 'ताज' को देख कर अपने पति द्वारा यह पूछा जाने पर कि 'कहो इस अद्भुत इमारत के विषय में तुम्हारी क्या राय है?' उत्तर दिया था कि 'मैं इसके सिवा कुछ नहीं कह सकती कि 'यदि आप मेरी कबर पर ऐसा स्मारक बनावें तो मैं आज ही मरने को तैयार हूँ।'

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—सत्यनारायण की जीवनी क्या है?

२—आगरे के 'ताज' को देखकर लेडी ने अपने पति से क्या उत्तर दिया?

३—उक्त गद्य का शीर्षक क्या हो सकता है?

४—'मसीहा' किसे कहते हैं?

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य का सरलार्थ अपनी बोली में स्पष्ट करो।

२—रेखांकित पदों का स्पष्टीकरण करो।

३—'सन्तोष' के ऊपर एक संक्षिप्त लेख लिखो।

४—हाथी, पक्षी, साँस के तत्सम स्वरूप लिखो।

५—संसार से कूँच करने के लिए विवश होना, मुर्दों को जिन्दा करने वाला, सदा के लिए विदा होना—का तात्पर्य वाक्यों में प्रयोग करके समझाओ।

व्याकरण के लिए —

१—प्रथम वाक्य का वाक्य विश्लेषण करो।

२—गहन, समस्त, विश्वास, तरज—की शब्द निरुक्ति करो।

३—पुष्पांकित शब्दों के सविग्रह समास लिखो।

४—निम्नांकित वाक्यों में व्याकरण दोष बतलाओ—

(अ) मोहन खाना खाती है और सोहन।

(ब) सत्यनारायण बड़ी श्रेष्ठ कवि थी।

(स) इनका कविता बड़ा सुन्दर है।

विषय सम्बन्धी —

१—सत्यनारायण पर टिप्पणी करो।

२—'नाटक' किसे कहते हैं ? स्पष्ट व्याख्या करो।

३—रस किसे कहते हैं, वह कितने होते हैं ? करुण रस को उदाहरण देकर स्पष्ट समझाओ।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—प्रतिकूल परिस्थिति = विरुद्ध वातावरण। समय से पहिले   विवश होना पड़ा = उनकी अकाल मृत्यु होगई। सहृदय = कोमल हृदय। भाग्य हीनता = हत भाग्यता। समवेदना = सहानुभूति। सौभाग्यशाली = भाग्यवान्। गहन = घोर। थपकी सद देने वाला = शान्तिपूर्वक प्रशंसा करने वाला। मसीहा = वैद्य। सतप्त आत्मा = दुखित प्राण। सन्तोष   सकती है—बड़े आनन्द से रह सकती है। अन्यान्य = दूसरे। कृतघ्न = नीच। खुश नसीबी पर रश्क करते हैं = सौभाग्य पर दूसरे ईर्ष्या करते हैं। मुर्दों को   मिल जायगा = कोई हमारा भी जीवन चरित्र लिख देगा। स्मारक = यादगार।

(१६)

एडीसन ने जो आविष्कार किये वे प्राय सभी विचित्र हैं, देखकर बुद्धि चकरा जाती है। सीनेमा को ही लीजिए इस म जो चलती फिरती तस्वीरें दिखाई देती हैं, उनका फोटो यन्त्र इन्हीं क विशाल मस्तिष्क की उपज है। एडीसन ने ऐसा कैमरा बनाया है, जिसके द्वारा सैकिण्ड में पचास साठ चित्र लिये जा सकते हैं। अगर वह उस यन्त्र को न बनाते, तो आज चित्र पट पर लोगों को चर चित्र न दिखाई देते। सिनेमा मनोरंजन की ही सामग्री नहा है, उससे किसी देश जाति के आचार व्यवहार, वहाँ की शासन-नीति तथा मनुष्यों की विविध मानसिक अवस्थाओं का हाल भी जाना जा सकता है। कितनी ही ऐसी विचित्र क्रियाओं का चर चित्रों द्वारा प्रत्यक्ष होता है, जिनका अन्य प्रकार देख सकना असम्भव नहीं तो कष्ट-सम्भव अवश्य है। परन्तु एडीसन की कृपा से ये सब कार्य सरल होगये और जगह जगह दर्शकों के मनोरंजन तथा उपदेश क लिए सिनेमा गृहों की स्थापना होने लगी। सिनेमा के चर चित्र बनाने मे एडीसन का ही कैमरा काम में लाया जाता है, और उसी से ली हुई चलती फिरती तस्वीरें देखने के लिए सिनेमा हाऊसों में दर्शकों की भीड़ लगी रहती है।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—एडीसन ने कैमरा कैसा निर्माण किया है ? स्पष्ट बतलाओ ।

२—सिनेमा से क्या क्या बातें ज्ञात होती हैं ?

३—सिनेमा में क्या दिखलाया जाता है ?

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य का निष्कर्ष सरल भाषा में स्पष्ट करो।

२—रेखांकित पदों का स्पष्टीकरण करो ।

३—'सिनेमा' के ऊपर एक लेख लिखो जो तीन पृष्ठ के लगभग हो।

४—बुद्धि चकरा जाती है, मनोरंजन, प्रत्यक्ष, आचार व्यवहार को वाक्यों में प्रयोग करो।

व्याकरण के लिए —

१—प्रथम वाक्य का वाक्य पृथक् करण करो।

२—विचित्र, सामग्री, कृपा, लाया जाता है, सीख का पदान्वय करो।

३—निम्नलिखित कर्तृ प्रधान वाक्यों के कर्म प्रधान वाक्य बनाओ—

(अ) मोहन खाना खाता है ।

(ब) दर्जी कपड़ा सीता है ।

(स) रमेश पुस्तक पढ़ता है।

विषय सम्बन्धी —

१—एडीसन कौन था ? संक्षिप्त टिप्पणी करो ।

२—'सिनेमा' के देखने के लिए क्यों जाते हैं ? स्पष्ट समझाओ।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—आविष्कार = नई नई खोज । उपज = पैदा, उत्पन्न । चर चित्र = चलने वाली तसवीरें । मनोरंजन = दिलबहलाव । दर्शक = देखने वाले । आचार व्यवहार = चरित्र रीति ।

(१६)

एडीसन ने जो आविष्कार किये वे प्राय सभी ऐ
हैं, देखकर बुद्धि चकरा जाती है। सीनेमा को ही
जिए इस में जो चलती फिरती तस्वीरें दिखाई देत
उनका फोटा यन्त्र इन्हीं के विशाल मस्तिष्क की उपज
एडीसन ने ऐसा कैमरा बनाया है, जिसके द्वारा से
में पचास साठ चित्र लिये जा सकते हैं। अगर वह
यन्त्र को न बनाते, तो आज चित्र पट पर लोगों को
चित्र न दिखाई देत। सिनेमा मनोरजन की ही स
नहीं है, उससे किसी देश जाति के आचार व्यवहार,
की शासन-नीति तथा मनुष्यों की विविध मानसिक
स्थाओं का हाल भी जाना जा सकता है। किन्तु
ऐसी विचित्र क्रियाओं का चर चित्रों द्वारा प्रत्यक्ष
है, जिनका अन्य प्रकार दख सकना असम्भव नहीं
कष्ट-सम्भव अवश्य है। परन्तु एडीसन की कृपा
सब कार्य सरल होगये और जगह जगह दर्शकों के
रजन तथा उपदेश क लिए सिनेमा गृहों की स्थापना
लगी। सिनेमा के चर चित्र बनाने में एडीसन क
कैमरा काम में लाया जाता है, और उसी से ली
चलती फिरती तस्वीरें देखने के लिए सिनेमा हाउस
दर्शकों की भीड लगी रहती है।

मथुरा और कन्नौज प्रभृति स्थानों से भी अनन्त धन-राशि ले गया। यदि भारत की तत्कालीन* सम्पति की जानकारी करनी हो तो उत्तर और दक्षिण भारत के उस समय के बने हुए सैकड़ों भव्य मन्दिरों को देखना चाहिये, जिनके कलश मूर्तियाँ या स्तम्भ सोने, चाँदी अथवा रत्नों से जटित थे।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—भारतवर्ष की आर्थिक स्थिति का वर्णन करो।

२—प्लिनी ने भारतवर्ष को क्या कहा है ?

३—भारतवर्ष में किन किन वस्तुओं की खानें थीं ?

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य को संक्षेप में स्पष्ट करो।

२—रेखांकित पदों तथा शब्दों का स्पष्टीकरण करो।

३—व्यापार अथवा कृषि पर एक लेख लिखो जो लगभग २५ पंक्तियों के हो।

४—सोना, दिन, अठगुना, साँकल के तत्सम स्वरूप बतलाओ।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों के सविग्रह समास लिखो।

२—प्रथम वाक्य का वाक्य विश्लेषण करो।

३—सम्पत्ति, मथुरा, मँहगी, बाहर, बने हुये—का पदान्वय करो।

—नी का पुल्लिंग क्या होता है ?

भारतवर्ष कृषि, व्यापार, व्यवसाय और अमूल्य खानों के कारण बहुत समृद्ध था। उस समय खाने पीने की चिन्ता अधिक नहीं थी। नागरिक जीवन से भी मालूम होता है कि प्राचीन भारतीय सम्पन्न और समृद्ध थे। व्यापार में निर्यात के बहुत अधिक होने के कारण भारत की सम्पत्ति दिन दिन* बढ़ती जाती थी। भारतवर्ष में हीरे, नीलम, मोती और पन्नों की भी कमी नहीं थी। प्रसिद्ध कोहनूर हीरा भी भारत में उस समय विद्यमान था। प्लिनी ने भारतवर्ष को हीरे, मोती आदि क़ीमती पत्थरों की जननी और मणियों का उत्पादक कहा है। वस्तुतः भारतवर्ष हीरे, लाल, मोती, मूँगे और भाँति भाँति के अन्य रत्नों के लिए प्रसिद्ध है। सोना भी यहाँ बहुत मात्रा में था। लोहा, ताँबा, और सीसा भी बहुतायत से निकलता था। अधिकांश चाँदी बाहर से आती थी, इसलिये मँहगी रहती थी। आरम्भ में सोने का मूल्य चाँदी से अठगुना* था जो हमारे निर्दिष्ट काल के अन्त में बढ़ता हुआ सोलह गुना तक पहुँच गया। यह समृद्धि हमारे समय के अन्तिम काल तक विद्यमान थी। सोमनाथ के मन्दिर में सोने और चाँदी की अनेक रत्नजटित* मूर्तियाँ थीं। पास ही २०० मन सोने की साँकल थी, जिसके घन्टे बँधे होते थे। महमूद गजनवी उसी मन्दिर से एक करोड़ रुपयों से अधिक मूल्य की सम्पत्ति लूट में ले गया था। इसी तरह

(२१)

इङ्गलिस्तान में रहकर श्रीमती ने अपने समय का बहुत अच्छा उपयोग किया। विद्या लाभ के अतिरिक्त आपने वहाँ के कई बड़े-बड़े साहित्य-सेवियों से परिचय प्राप्त किया। उस छोटी अवस्था में भी अपने उच्च विचारों के कारण तथा व्यक्तिगत प्रभाव द्वारा आपने वहाँ पे बहुत से लोगों के हृदय में स्थान प्राप्त कर लिया। इङ्गलिस्तान में रहते समय आपने इटली की भी सैर की, इटली के ऊपर आप जी जान से मोहित हो गई। उसके विषय में अपने विचारों को प्रकट करते हुए जो पत्र आपने मिस्टर आर्थर साइमन्स के पास भेजे थे, उनसे इस बात का पता चलता है कि आप पर इटली का कितना बड़ा प्रभाव पड़ा था। श्रीमती सरोजिनी के ये पत्र अत्यन्त उत्कृष्ट तथा सुन्दर अङ्गरेजी के नमूने हैं। इनमें प्रान्त्य की झलक भी स्पष्ट है। भारत में लौटने के तीसरे ही महीने सरोजिनी ने १६ वर्ष की अवस्था में, अपने प्रणय पात्र श्री गोविन्द राजलु नायडू से विवाह कर लिया। यद्यपि इस विषय में भारत भर में नाना प्रकार की टिप्पणियाँ हुईं, तथापि सरोजिनी ने अपने स्वतन्त्र विचारों को कर्मरूप में परिणत करके दिखला दिया। सरोजिनी का वैवाहिक जीवन बड़ा सुखमय रहा है। आपके चार सन्तानें भी हैं। श्रीमतीजी की कविता

विषय सम्बन्धी —

१—सोमनाथ के मन्दिर की ऐतिहासिक घटना का उल्लेख करो।

२—मथुरा और कन्नौज की ऐतिहासिक घटनाओं पर टिप्पणी करो।

३—सोना अथवा चाँदी की आत्मकथा वर्णन करो।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—नागरिक जीवन = शहर का जीवन। सम्पन्न और समृद्ध थे = धनवान् थे। निर्यात = जो माल दूसरे देशों को जावे। जननी = माता। उत्पादक = पैदा करने वाला। प्रभृति = आदि। अनन्त धनराशि = अत्यन्त अधिक धन। भव्य-सुन्दर। स्तम्भ = खम्भे

४—'मोहित हो गइ' क्रिया का क्या तात्पर्य है ? इसकी और पर्य्यायवाची क्रियाएँ बताओ।

५—मिस्टर का स्त्रीलिंग और बहुत का बहुवचन क्या होता है ?

विषय सम्बन्धी —

१—श्रीमती सरोजिनीनायडू के किस विषय में भारत में नाना प्रकार की टिप्पणियाँ हुइ ? स्पष्ट उल्लेख करो।

२—श्रीमती सरोजिनी नायडू ने कहाँ-कहाँ की सैर की और क्यों ?

३—श्रीमती की कविता मे क्या झलक पाई जाती है ?

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—परिणत = बदलना। वैवाहिक = विवाह-सम्बन्धी। अनुशीलन = अध्ययन। अवकाश = छुट्टी, फुरसत।

(२२)

भक्ति से अधीर हो एक दिन वहाँ पहुँच ही तो गया। गरमी के दिन थे। सूर्य भगवान् क्षितिज रेखा को रक्तानुरञ्जित* करने में व्यग्र थे। वृक्षों की छाया, सज्जनों की मैत्री के समान, पल पल पर बढ़ती ही जाती थी। सन्ध्या गगन की ललित लालिमा कवि कल्पना* को प्रगाढ़ालिंगन दे रही थी। गोधूलि सी सुनील आकाश पाण्डुवर्ण हो गया था। निदाघ ताप* अब बहुत कम था। अस्तु उस स्थान की क्षेत्र सीमा पर मैं पहुँचा। जिस पवित्र नदी के तट पर उस नर श्रेष्ठ का आश्रम अवस्थित है उसमें, धूपादिग्ग की प्रचण्डता के कारण, जल की एक क्षीण रेखा दूसरे पार दिखाई देती थी। दूर तक बालू ही बालू नज़र आ रही थी। वृक्ष झुलस से गये थे। सूखी पत्तियाँ झड़ झड़ कर जहाँ तहाँ बिछ गई थीं। कपास के पेड़ बड़े सुहावने जान पड़ते थे। बीच में एक खपरैल भवन था और उसके आस पास कई छोटी-छोटी कुटियाँ। सादे रहन सहन* के कुछ परिश्रमी व्यक्ति और क्रीड़ा निरत बालक-बालिकाओं को उस स्वतन्त्रता-सदन* के आँगन में देख कर मैं पुलकित और प्रफुल्लित हो गया। आश्रम में बड़ी स्वच्छता और पवित्रता थी। उस तीर्थ भूमि* पर पैर रखते ही एक प्रकार की दिव्य शान्ति का अनुभव होने लगा।

विषय सम्बन्धी —

१—गर्मी की ऋतु में वृक्षों की क्या दशा हो जाती है? स्पष्ट उल्लेख करो।

२—गर्मी की दोपहरी का पूर्ण वर्णन करो।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—क्षितिज रेखा = वह लकीर जहाँ जमीन और आसमान मिलते हैं। रक्तानुरंजित = लाल रंग से अच्छी तरह रँगी। प्रगाढ़ालिंगन दे रही थी = कस कर गले मिल रही थी। पाण्डुवर्ण = पीले रंग का। निदाघ तेज = धूप की गर्मी। क्षेत्र-सीमा = जमीन की हद। नर श्रेष्ठ = महापुरुष। आश्रम = मठ। अवस्थित है = बना हुआ है। वृषादित्य = सूर्य। प्रचण्डता = तेजी। क्रीड़ा निरत = खेल में लगे हुए। स्वतन्त्रता सदन के आँगन में = स्वातन्त्र्य रूपी घरके आँगन अर्थात् उस साबरमती तट के आश्रम में। पुलकित = रोमांचित। तीर्थभूमि = पवित्र जमीन। दिव्य = अलौकी।

(२३)

साहित्य के दो भेद किये जा सकते हैं, एक काव्य और दूसरा विज्ञान । काव्य की कल्पना का साम्राज्य है और विज्ञान में तर्क का । काव्य कभी भी तर्क का सामना नहीं कर सकता । उपन्यास और नाटक काव्य के अन्तर्गत हैं और इतिहास विज्ञान में सम्मिलित किया जा सकता है । काव्य का कार्य क्षेत्र अन्तर्जगत् है और विज्ञान उपादान बहिर्जगत् है । हम लोगों को प्राय सत्य का रूप बाह्य जगत् में ही परिमित होता है । अन्तर्जगत् की घटनाओं में वे सहसा सत्य का स्वरूप नहीं देख सकते । पत्थर के लगने से फल का गिरना सत्य है । उसको सभी मान लेंगे, परन्तु किसी अलक्षित कारण विशेष से मनुष्य के अध पतन में सत्य का दर्शन कर लेना सभी के लिए साध्य नहीं है । विज्ञान के आविष्कारों की सत्यता में किसी को सन्देह नहीं हो सकता, परन्तु जब कवि अपनी कल्पना द्वारा अन्तर्जगत् का गूढ रहस्य समझने लगता है, तब कुछ लोग संदिग्ध चित्त हो सकते हैं। कितने ही लोग ऐसे हैं जो कल्पना को सत्य का विरोध समझते हैं ।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—साहित्य के कितने भेद किए जा सकते हैं ?

२—उपन्यास और इतिहास किस कोटि में सम्मिलित किये जा सकते हैं ?

विषय सम्बन्धी —

१—गर्मी की ऋतु में वृक्षों की क्या दशा हो जाती है? स्पष्ट उल्लेख करो।

२—गर्मी की दोपहरी का पूर्ण वर्णन करो।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—क्षितिज रेखा = वह लकीर जहाँ जमीन और आसमान मिलते हैं। रक्तानुरंजित = लाल रंग से अच्छी तरह रंगी। प्रगाढ़ालिंगन दे रही थी = कस कर गले मिल रही थी। पाण्डुवर्ण = पीले रंग का। निदाघ तेज = धूप की गर्मी। क्षेत्र-सीमा = जमीन की हद। नर श्रेष्ठ = महापुरुष। आश्रम = मठ। अवस्थित है = बना हुआ है। ग्रीष्मादित्य = सूर्य। प्रचण्डता = तेजी। क्रीड़ा निरत = खेल में लगे हुए। स्वतन्त्रता-सदन के आँगन में = स्वातन्त्र्य रूपी घरके आँगन अर्थात् उस साबरमती तट के आश्रम में। पुलकित = रोमांचित। तीर्थभूमि = पवित्र जमीन। दिव्य = अनोखी।

---

(२४)

यह कैसा चित्र खींचा है, भाई! यह तो किसी मानिनी नायिका का चित्र जान पड़ता है। कोपभवन® खूब बनाया है। स्फटिक शिला पर एक मैली सी सेज बिछी है। मानिनी उसी पर करवट लिये पड़ी है। सारा शरीर धूलि धूसरित® है। केश खुले हुए हैं। अङ्ग पर एक भी भूषण नहीं, उनके सब इधर उधर पड़े हैं। एक सहेली आपको पङ्खा झलती है और दूसरी हाथ पकड़े मना रही है। पतिदेव पैर पलोट रहे हैं! पर श्रीमती मानिनी देवी उस बेचारे की ओर देखती तक नहीं। चित्र कौशल तो तेरा वास्तव में, प्रशसनीय है, पर है यह सब घृणित और विषाक्त। इस चित्राङ्कण का तुझे पुरस्कार दिया जाय? पारितोषिक पाने के पहिले अपनी कलुषित लेखनी तोड़ कर फेंक दे, गन्दे रंग उडेल दे, निर्जीव® उँगलियाँ काट डाल। तुझे कुछ खींचना ही है तो ऐसा चित्र खींच। सब से पहल एक शुभ्र मन्दिर बना। देख उसके चारों ओर अग्निदेव प्रखर ज्वालाएँ उगल रहे हों। मन्दिर में एक प्रलयङ्कारिणी महाशक्ति® प्रतिष्ठित हो। उसके ज्वलन्त नेत्रों से वह्निशिखा® निकल रही हो। अट्टहास की मुद्रा हो। दाँतों में बिजली सी कौंधती हो। हृदय पर लाल फूलों का हार पड़ा हो। साड़ी भी लाल ही हो। सारा शरीर

३—कवि को अन्तर्जगत् का गूढ़ रहस्य समझने में कुछ लोगों की क्या धारणा हो जाती है ? स्पष्ट समझाओ।

रचना के लिए —

१—उक्त गद्यांश का निष्कर्ष अपनी बोली से अंकित करो।

२—रेखांकित पदों का स्पष्टी करण करो।

३—कार्य क्षेत्र, अध पतन, आविष्कारों, सन्दिग्ध चित को वाक्यों प्रयोग करो।

४—'विज्ञान' के ऊपर एक लेख लिखो जो २५ पंक्तियों का हो।

५—उपन्यास और नाटक पर टिप्पणी करो।

व्याकरण के लिए —

१—'हमलोग प्राय होता है' वाक्य का वाक्य-विश्लेषण करो।

२—सामना, सत्य, अपनी, देख सकते, ऐसे का—पद परिचय करो।

३—निम्नलिखित कर्तृ प्रधान वाक्यों से कर्म प्रधान बनाओ —

(अ) कवि कविता करता है।

(ब) इतिहास में घटनाओं का समावेश हर समय मिलता है।

(स) नाटक में पात्रों के अभिनय को देख मनको प्रसन्न करते हैं।

विषय-सम्बन्धी —

१—नाटक किसे कहते हैं ? इसके कै भेद हैं ? स्पष्ट उल्लेख करो।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—अन्तर्गत = अन्दर। काव्य का कार्यक्षेत्र बहिर्जगत है = काव्य में विशेष कर भाव वांछनीय है इसलिए वह तो हृदय गत वस्तु है। अपादान = जिस कार्य से कारण की उत्पत्ति हो उसे अपादान कारक कहते हैं। अलक्षित = न दिखलाइ देने वाला।

२—मैली, सहेली, लाल, तेज, दिया जायगा—का पदपरिचय करो।

३—कराल, प्रचण्ड, प्रखर, निर्जीव—से भाववाचक संज्ञाएँ बनाओ।

४—पुष्पांकित शब्दों के सविग्रह समास लिखो।

विषय-सम्बन्धी —

१—मानिनी नायिका किसे कहते हैं? सलक्षण समझाओ।

२—'कोप भवन' क्यों निर्माण किया जाता है? इस से क्या होता है?

३—मन्दिर की रचना किस प्रकार होनी चाहिए?

४—सोदाहरण सिद्ध करो कि "ईश्वर ही सच्चा चित्रकार है"।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—मानिनी = मान से भरी हुई। स्फटिक = संगमरमर। पैर पलोट रहे हैं = पैर दबा रहे हैं। प्रखर ज्वालाएँ = तेज आग की ज्वालाएँ अर्थात् भयङ्कर अग्नि की लपटें। प्रलयङ्कारिणी = प्रलय करने वाली। ज्वलन्त = जलते हुए। वह्निशिखा = आग की लपटें। अट्टहास = ज़ोर की हँसी। बिजली सी कौंधती हो = बिजली सी चमकती हो। लथपथ हो गया हो = खून में सन गया हो, खून में सराबोर हो गया हो। रक्त रञ्जित = खून से सनी हुई। कृपाण = एक प्रकार का शस्त्र। अखण्ड = बहुत बड़ा, पूर्ण। साम्राज्य = राज्य। शीर्षस्थानीय = पहले नम्बर का। पुरस्कार = पारितोषिक।

रुधिर से लथपथ हो। केश पैरों तक लहरा रहे हों। एक हाथ अनाथ भक्तों के मस्तक पर हो और दूसरे हाथ मे हो रक्त रञ्जित कराल कृपाण। मन्दिर में अखण्ड तेज और प्रचण्ड पराक्रम का साम्राज्य हो। चित्रकार ! क्या ऐसा चित्र न खींच सकेगा ? यदि हाँ, तो इसका पुरस्कार भी तुझे शीर्षस्थानीय दिया जायगा।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—उक्त गद्यमें चित्र किस का खींचा गया है ? उसका स्पष्ट उल्लेख करो।

२—चितेरे को चित्रांकण का पुरस्कार मिलने से पूर्व क्या करना चाहिए ?

३—उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक क्या हो सकता है ?

रचना के लिए —

१—उक्त गद्य का निष्कर्ष अपनी बोली में स्पष्ट करो।

२—रेखांकित पदों का स्पष्टीकरण करो।

३—'पुरस्कार' पर एक सक्षिप्त लेख लिखो।

४—धूल धूसरित, लथ पथ, रक्त-रञ्जित, बिजली-सी कौंधती है—का प्रयोग वाक्यों में समझाओ।

५—'कृपाण' की आत्म कहानी लिखो।

व्याकरण के लिए —

१—'सबसे पहिले मन्दिर बना' का वाक्य विग्रह करो।

प्रश्न

अभ्यास के लिए —

१—शरदपूर्णों की क्या छटा मनुष्यों को प्रिय लगती है और क्यों ?

२—साहित्य किसे कहते हैं ?

३—उक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक क्या हो सकता है ?

रचना के लिए —

१—उपर्युक्त गद्य का निष्कर्ष सरल भाषा में स्पष्ट करो।

२—रेखांकित शब्दों का स्पष्टीकरण करो।

३—'साहित्य' के ऊपर एक लेख लिखो।

४—तेजहीन, पुलकित, मन्दहासिनी, मधरमयी—को वाक्यों में प्रयोग करो।

५—पूर्णचन्द्र, मुँह, नाव, हाथी—के तत्सम् स्वरूप लिखो।

व्याकरण के लिए —

१—पुष्पांकित शब्दों में समासों का विग्रह करो और उनके नाम भी बतलाओ।

२—सुहाई, सकल, सरसाते, दुलारे, विचित्र—की शब्द निरुक्ति करो।

३—निम्नांकित वाक्यों में व्याकरण दोष बतलाओ।

(अ) जंगल में मोर नाची, किसने देखी।

(ब) फूल का सुगन्धित बहुत अच्छी हैं।

(स) लुहारिन आगे आता है और वे हथौड़ा लाती है।

(७५)

सरद्पूनों के समुदित पूरनचन्द॰ की छिटकी जुन्हा
सकल मनभाई के भी मुँह मसिमल, पूजनीय, अलौकिक
पदनखचन्द्रिका की चमक के आगे तेजहीन, मलीन औ
कलङ्कित कर दरसाती, लजाती सरस सुधा धौली अलौकि
सुप्रभा फैलाती अशेष मोह जडता प्रगाढ़ तमतोम सटका
मुकाती निजभक्त जनमन वाञ्छित वराभय मुक्ति मुक्ति
सुचारु चारों मुक्त हाथों स मुक्ति लुटाती, सकल कल
आलाप कलकलित सुलञ्जित सुरीली मीड गमक झनका
सुतार तार॰ सुरमाम अभिराम लसित बीन प्रवीन पुस्तक
लित मखमल से समधिक सुकोमल अति सुन्दर सुविम
लाल प्रवाल से लाल लाल करपल्लव सुहाती विवि
विधानिधान शुभ सौरभ सरसावे निकसे फूले सुमनप्रफा
हास बासव से अनायास सुगन्धित सित बसन लसन सो
सुप्रभा विकसाती सुविमल मानसविहारी मुक्ताहारी नारदी
विचार सुचतुर कविकोविद राज राजहिय सिंहास
निवासना मन्दहासिनी त्रिलोक प्रकासिनी सरस्वती, मा
के प्रति दुलारे प्राणों से प्यारे पुत्रों की अनुपम अनो
अतुल बलवाली परमप्रभावशाली सुजनमनमोहिनी नवरसभरी
सरस सुखद विचित्र वचनरचना॰ का नाम साहित्य है

ENGLISH PIECES FROM PAPERS, U P BOARD
1931—1937
1931

नीचे दिये गद्य खंड का अनुवाद कीजिये—

From the best land of the river you gaze at once up on the very heart of the old city, as it lies divided be fore you by the waters of the noble stream and at once you are aware that Baghdad has indeed fallen from her ancient splendour A bridge of boats spans the current You can distinguish swaming across a strange crowd of horse men and foot passengers and beasts of burden laden with fruits and vegetables of all kinds If you watch attentively you will see the dark form of some Arab Seikhs or bedouin of the desert emerge for a few moments distinct from the crowd and then disappear behind a camel moving slowly along under bales of goods pilled high on its back

1932

इसका हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

They had just reached the centure of the valley when there was heard, at some distance on the left the sound of a bugle They hurriedly formed in order of battle and prepared to meet the attack of the enemy who suddenly appeared from all sides One third of the little band was either wounded or slain and the rest surrender ed as no hope of safety remained Few histories can produce more various instances of cruelty than those which the French and the Italians at the time exercised upon each other On this occasion the victors put all the prisoners to death in the most cruel manner

विषय सम्बन्धी —

१—उक्त गद्य की शैली की समालोचना करो।

२—उपर्युक्त गद्य मे किस अलकार की छटा का दिग्दर्शन हो रहा ? सोदाहरण स्पष्ट समझाओ।

सहायक शब्द :—

शब्दार्थ—जुन्हाई = चाँदनी। अलौकिक = अद्भुत, सर्वसुन्दर। मलीन—मैली। कलङ्कित कर = दूषित कर। सुधा = अमृत। धौली = श्वेत, उज्वल। तमतोम = अन्धकार का ढेर अर्थात् घना अन्धकार। तुक = पाली। सुरधाम = बैकुण्ठ, स्वर्गलोक। प्रवाल = मूँगा। सौरभ = सुगंधि। हास = हँसी। वासव = इन्द्र। अनायास = अचानक। क्षीर = दूध। वसन = वस्त्र। सुजन मन मोहिनी = सज्जनों के मन को आसक्त करने वाली। नव रस भरी = नौ रसों से सम्पन्न (शृङ्गार, हास्य, करुणा, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स, अद्भुत, शान्त)। साहित्य = जो हित सहित हो और त्रिकाल में एक रस रहने वाला है उसीको साहित्य कह सकते हैं।

---

that you can do Close your eyes gently and below your nose . If the speck does not come out, bathe your eyes with clean water

1936

नीचे लिखे गद्य खंड का हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

Bharata entreated Rama to return to Ayodhya and ascend the throne My dear brother, said Bharata my heart aches to see you wandering here It is all the work of cruel Kaikeyi I am ashamed to call her my mother Pray come back and take up the kingdom which is yours by birth and which you are the fittest to rule . Rama would not move an inch from his fathers word 'The aged monarchs word he said to Bharata 'binds both you and me alike He owed a debt to Kaikeyi and herein he has only repaid it How can we disobey his commands and leave his debt unpaid

1937

हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

Padmini was the wife of Rana Ratan Singh king of Mewar a descendant of the famous Sisodia clan who boast of a purer descent than any other Rajputs The story is that she was the daughter of a Rajput king of Ceylon whose name is now forgotten . Ratan Singh had heard stories of her great beauty from travellers and traders who came from that country to Mewar and he longed incessantly to gain the hand of this princess . It is said that he went upon the quest of this beauty in the garb of a beggar and won her after many hardships

1933

हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

British boys spend so much of their time in play that many people think they would do more good to them selves and their country if they devoted much more of their time to study and work But the foundation of success in life and of all that makes a good and a valua ble citizen is character and there is no better school for the formation of character than the play ground

1934

अपनी हिन्दी मे नीचे के अँग्रेजी गद्य खड का अनुवाद कीजिये—

The greatness and beauty of London can be realized and appreciated by a new comer only when the days are bright and shining One must remember that London is the centre of the commerce of the world as well as the capital of the great British Empire These are the two features which give London the peculiar and un paralleled charm. A great many open places and huge congested palatial buildings exist side by side

1935

नीचे के अँग्रेजी गद्य खड का हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

While you read, take care that you do not face the light. Let the light fall on your book over your left shoulder The light after sunset is about the poorest light you can have for reading You will save your eyes if you never read in the twilight. Do not look at the son or at a bright gas or electric lamp If you get some thing in your eyes do not rub it. That is the worst thing

that you can do Close your eyes gently and below your nose If the speck does not come out, bathe your eyes with clean water

1936

नीचे लिखे गए खंड का हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

Bharata entreated Rama to return to Ayodhya and ascend the throne 'My dear brother, said Bharata my heart aches to see you wandering here It is all the work of cruel Kaikeyi I am ashamed to call her my mother Pray come back and take up the kingdom which is yours by birth and which you are the fittest to rule Rama would not move an inch from his father's word 'The aged monarch's word, he said to Bharata, 'binds both you and me alike He owed a debt to Kaikeyi and herein he has only repaid it How can we disobey his commands and leave his debt unpaid ?

1937

हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

Padmini was the wife of Rana Ratan Singh king of Mewar a descendant of the famous Sisodia clan who boast of a purer descent than any other Rajputs The story is that she was the daughter of a Rajput king of Ceylon whose name is now forgotten Ratan Singh had heard stories of her great beauty from travellers and traders who came from that country to Mewar and he longed incessantly to gain the hand of this princess It is said that he went upon the quest of this beauty in the garb of a beggar and won her after many hardships

ENGLISH PIECES FROM PAPERS, RAJPUTANA BOARD 1931--1936

1931

इसका हिन्दी मे भाषान्तर कीजिये—

General Baker and the British Officers with him were perfectly aware of tne danger of the expedition but they determined to do their best The force was taken down the coast by ship to Trinkitat, the port nearest Tokar The troops landed and marched to wards that town but on the way they were attacked by the tribesman of Osman Digna The undisciplined troops of Baker broke directly they were attacked Their British Officers fought gallantly, but many of them were killed the rest cut their way through the enemy and succeeded in reaching Trinkitat The greater portion of the Egyptians were massacred almost without resistance the rest fled to Trinkitat hotly pursued by the enemy

1932

नीचे लिखे उदाहरण का हिन्दी में भाषान्तर कीजिए—

Although his whole strength consisted but of 2600 men he did not hesitate to give battle and advanced against their position They were posted on a high bank rising from the dry bed of a river The position was about 1,200 yards long with dense woods on either flank enabling them to sweep our ranks with their musketry fire as we advanced Eighteen guns were placed in advance of the line In front of the wood on our right was a wall having one opening halfway

between the two armies, behind this wall was a large force of the enemy, who had prepared to rush out and fall upon our rear as passed

1933

नीचे दिए हुए उदाहरण का सरल हिन्दी में भाषान्तर कीजिए—

Sir Robert Sale was with a brigade on the way down from Cabul when the news overtook him of the rising in that town He was at once attacked by the tribesmen but fought his way down to Jellalabad, and determined to establish himself there The prospect was a gloomy one. He was far away from succour or support, the walls of the town were in ruins, and in many places were not more than two feet high their circumference a mile and a quarter, was too great to be properly defended by so small a force. Nevertheless for the months the little force maintained itself sallying out and attacking the enemy whenever they approached and driving in cattle At last, after a five months siege the garrison boldly marched out, attacked the fesieging army in their camp, completely routed them and captured all their cannon

1934

नीचे लिखे उदाहरण का भाषान्तर सरल हिन्दी में कीजिए—

Eight hours after the battle had been concluded the army was again on the march, and the next day the cavalry arrived at Mirpur, the capital or Sher

Mohammad The chief had already left the town Terms were then offered to him if he would surrender, but this he refused to do, and an irregular warfare continued for some time until all resistance was crushed out after which Sindh was annexed to British India

1935

सरल हिन्दी में भाषान्तर कीजिए—

Once out hunting Jahangir espied a lion lying asleep among the bushes He called for a musket and supporting the barrel of it on the shoulder of one of his noblemen took careful aim and shot the lion The lion being wounded rushed furiously at the emperor but the nobleman who was a Rajput stepped in front of Jahangir and wrestled with the animal even putting his arm through the lion s jaws and thus saved the emperor until his courtiers could come up and kill the beast

1936

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

British boys spend so much of their time in play that many people think they would do more good to themselves and their country if they devoted much more of their time to study and work But the foundation of success in life and of all that makes a good and valuable citizen is character and there is no better school or college for the formation of charactor than their playing fields

USEFUL UNSEEN ENGLISH PASSAGES

निम्नलिखित का हिन्दी में अनुवाद करो—

Why are the names of Sita Savitri and Damayanti so sacred and commonplace in every household and the cause of inspiration ? What are the qualities that made them so great ? They had no stupidity quarrel someness, idleness, timidity and so on. Damayanti had no terror of death though she was separated from the husband It was spiritual understanding and intellectual development that made them great When women lost their self reverence degeneration came in

Degeneration—अधोगति।

निम्नलिखित का हिन्दी में अनुवाद करो—

The special message of life for India to day was the message of unity. No longer divided by anything save a difference of mere language no longer divided by any real or any blasting difference of aspiration no longer divided by anything through lack of that one thing that makes and intellectual and spiritual meeting ground that is a common education, one realised that it was the same cry which she heard on all hands and that was that they wanted to serve their mother country and achieve something

Message—सन्देश। Intellectual—मानसिक।

निम्नलिखित का हिन्दी में अनुवाद करो—

A group of young men have the world before them have ... eir backs upon personal gain personal joy nd ... cognition and made themselves into

HINDI UNSEEN PIECES FROM PAPERS U P BOARD 1931—1937

1931

नीचे लिखे वाक्य-समूह का सार अपनी भाषा में लिखिए —

'प्रकृति सदैव उन्नतिशील है। उसकी गति की सहायता करना कल्याणकर और उसका प्रतिरोध करना हानिकर होता है। इसलिए मनुष्य मात्र का कर्तव्य है कि सदैव अभ्युदय और उन्नति पर ताक लगाये रहे। मस्तिष्क-विज्ञान के सिद्धान्त सफलता और आनन्ददान के सूचक हैं। उन्हें एक प्रकार का मन्त्र समझ लीजिए। उनकी सिद्धि समाज ही के हाथ में है। यह काम किसी एक व्यक्ति का नहीं है। अकेले बैठकर किसी व्यक्ति से कोई बड़ा काम न आज तक हुआ है, न होगा। जब हुआ है तब सहकारिता से ही हुआ है। समाज की शोचनीय और हृदय विदारक अवस्था पुकार पुकार कर कह रही है कि अब भी चेतो, वृथा समय नष्ट न करो। सहकारिता से ही उन्नति कर सकोगे, अन्यथा नहीं। संसार की सांप्रतिक स्थिति से यह भी ज्ञात होता है कि यथार्थ मानुषिक शक्तियाँ किस सीमा तक क्षीण हो गई हैं और कौन कौन से दुर्गुण मनुष्य में आ गये हैं। प्राकृतिक नियमों के अनुसार शिक्षा प्राप्त करके यदि हम लोग सफलता के रहस्यों का कार्य में परिणत करने लगें तो सारी दुरवस्था दूर हो जाय।'

1932

नवाभ्यासी कवियों को सद्य कविता के चक्कर में पड़कर पथभ्रष्ट न होना चाहिए। पहिले कविता-सम्बन्धी ग्रन्थों का

अभ्यास करें, प्राचीन उत्तम काव्यों का निरन्तर अनुशीलन करें, किसी सत्कवि से परामर्श लेते रहें, अपनी रचना को बार बार समालोचक दृष्टि से देखते रहें, उसमें आवश्यकतानुसार काट छाँट और परिवर्तन करते रहें। इस प्रकार सतत अभ्यास से जब कविता में चमत्कार चारुता और पदसौष्ठव आ जाय तब इस अखाड़े में उतरें। कवि-सम्मेलन कविता की एक प्रदर्शिनी है, प्रदर्शिनी में शिल्पकला के सर्वोत्कृष्ट नमूने ही रक्खे जाते हैं, निकृष्ट और भद्दे माल को कोई आँख उठाकर देखता भी नहीं।

(१) उपर्युक्त वाक्य समूह का सार अपनी भाषा में लिखिये।

(२) रेखाङ्कित वाक्यांशों के भाव स्पष्ट कीजिए।

1933

भारतेन्दुजी के जीवन का उद्देश्य अपने देश की उन्नति के मार्ग को साफ-सुथरा और लम्बा चौड़ा बनाना था। उन्होंने इसके काँटों और कंकड़ों को दूर किया, उसके दोनों ओर सुन्दर सुन्दर क्यारियाँ बनाकर उनमें मनोरम फल-फूलों के वृक्ष लगाये। इस प्रकार उसे ऐसा सुरम्य बना दिया कि भारतवासी उसपर आनन्दपूर्वक चलकर अपनी उन्नति के इष्ट स्थान पर पहुँच सकें। यद्यपि भारतेन्दुजी अपने लगाये हुए वृक्षों को फल फूलों से लदा न देख सके, फिर भी हमको यह कहने में किसी प्रकार का संकोच नहीं होता है कि वे अपने जीवन के [illegible] सफल हुए। हिन्दी भाषा और साहित्य की

जो उन्नति आज देख पड़ रही है उसके मूल कारण भारतेन्दुजी हैं और उन्हें ही इस उन्नति के बीज को आरोपित करने का श्रेय प्राप्त है।

(१) भारतेन्दुजी के जीवन का क्या उद्देश्य था ? इस उद्देश्य में वे किस प्रकार सफल हुए ?

(२) रेखाङ्कित वाक्यांशों के भाव स्पष्ट कीजिये।

1934

नालदा का महाविहार एक आदर्श विद्यालय था। भारतीय शिक्षा के उच्च आदर्श उसमें वर्तमान थे। कोलाहलपूर्ण संसार से दूर, निर्मल जलाशयों और सुविस्तृत आम्र काननों से सुशोभित, शीत एवं सात्विक तपोवन में, इसकी स्थापना हुई थी 'तपोवन और तपोमय जीवन'—यही इसकी महत्ता का रहस्य था। आगरे के जगत्प्रसिद्ध 'ताजमहल' पर कवियों ने अनूठी उक्तियाँ कही हैं, पर नालन्दा के भग्न—किन्तु दिव्य विहारों और संघारामों पर उनका हृदय नहीं पसीजा। नालन्दा तपस्वी महात्माओं के यश सौरभ से सुरभित है। इसमें हृत्तन्त्री को झंकृत करने की पर्याप्त सामग्री है। इस तीर्थ भूमि का प्रत्येक रेणु कण भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का दर्पण है।

(१) नालन्दा महाविहार की महत्ता का क्या रहस्य था इसके खँडहरों का दर्शक के हृदय पर कैसा प्रभाव पड़ता है

(२) लेखक की कवियों से क्या शिकायत है ?

(३) रेखाङ्कित वाक्यांशों के भाव स्पष्ट कीजिए।

1935

दूसरी बात जो इस सम्बन्ध में विचार करने की है वह यह है कि किसी भाषा के ज्ञानमात्र को शिक्षा नहीं कह सकते। शिक्षा से तात्पर्य मस्तिष्क के विकास का है जो भिन्न भिन्न विषयों के मनन से होता है। अँग्रेजी भाषा से ज्ञान की आवश्यकता को तो हम मानने के लिए पूर्ण उद्यत हैं पर हमारी समझ में यह नहीं आता कि इस बात की क्या आवश्यकता है कि हम भारत के मस्तिष्क विकास के लिए भी एक विदेशी भाषा का आश्रय ग्रहण करें।

(क) रेखाङ्कित वाक्यांशों के भाव स्पष्ट कीजिए।

(ख) विदेशी भाषा द्वारा भिन्न भिन्न विषयों की शिक्षा देने से क्या कठिनाई होती है? सक्षेप में बतलाइये।

(ग) अँग्रेजी भाषा के ज्ञान से भारतवासियों को क्या लाभ पहुँचा है?

1936

१—मनुष्य प्रगतिशील है। स्वस्थ मनुष्य और स्वतन्त्र जातियाँ उन्नति और विकास की पराकाष्ठा तक पहुँचने की कोशिश करती हैं। मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्तियाँ भिन्न भिन्न रूपों में प्रगट होती हैं। हर एक धर्म का मानने वाला अपने धर्म को सार्वभौम धर्म कहता है। इसका कारण यह है कि सब धर्म वाले परमात्मा सर्वव्यापक, अप्रतिहत शक्ति में विश्वास रखते हैं। इस विश्वास के कारण समझते हैं कि एक शासक,

HINDI UNSEEN PIECES FROM PAPERS RAJPUTANA BOARD
1931—1935
1931

तुलसीदास के राम चरित-मानस में काव्य और संगीत का अपूर्व संयोग है। संगीत केवल राग—रागनी के भीतर ही आबद्ध नहीं है। उसकी व्याकुलता किसी भी ढाँचे में नहीं ढाली जा सकती है। उनके इस काव्य में मानव चरित्र के व्यक्तिगत विकास के साथ ही साथ, पानी के ऊपर तेल की तरह, भक्ति रस का स्रोत अलग से बहता आता है। तुलसीदास की यह अभिनव रचना उनके हृदयस्थित आनन्द का ही उद्‌गार है। उन्होंने यह ग्रन्थ "स्वान्त सुखाय" ही लिखा है। यही कारण है कि हम आज विज्ञ और अनभिज्ञ सभी व्यक्तियों पर समभाव से उसका प्रभाव देख पाते हैं। यदि यह रचना आनन्दस्थित न होकर लोगों में भक्ति के प्रचार के भाव से लिखी गई होती, तो हम इसका यह आनन्द कदापि न देख पाते।

(क) राम चरित मानस की लोक प्रियता का लेखक ने क्या मुख्य कारण बतलाया है? स्पष्टरीति से समझाइये।

(ख) ऊपर के अवतरण में रेखांकित पद का भाव लिखिये।

1932

पुस्तकों के हम सब बड़े ऋणी हैं। ये अध्यापक हमको बिना दण्ड लकुट प्रहार के बिना कुटिल शब्द कहे

या क्रोध किए और बिना द्रव्य लिए हुए ही शिक्षा दे सकते हैं। यदि आप इनके सन्निकट जाइये तो ये सोते न मिलेंगे। यदि आप जिज्ञासु हैं और इनसे प्रश्न करते हैं तो ये आपसे कुछ परोक्ष न रक्खेंगे, यदि आप इनके रूप को यथार्थ न समझिये तो भुनभुनायेंगे नहीं, यदि आप अज्ञानी हैं तो ये आपकी मूर्खता पर हँसेंगे नहीं। इससे बुद्धि तथा ज्ञान से पूर्ण पुस्तकालय इस लोक की समस्त सम्पत्ति से बहुमूल्य है। और किसी स्पृहणीय वस्तु की तुलना उससे नहीं की जा सकती। सच तो यह है जो कोई सत्य, आनन्द, धर्म व विज्ञान का जानना चाहता है तो उसे निश्चय पुस्तकों से प्रेम करना चाहिए।

(क) ऊपर के अवतरण में रेखांकित स्थलों का भाव स्पष्ट कीजिये।

(ख) ऊपर के अवतरण में पुस्तकों की तुलना किससे की गई है और किसे श्रेष्ठ बतलाया है?

1933

अब तो विद्वानों का भी ध्यान मातृभाषा की ओर और भी अधिकता से आकर्षित होने लगा। उन लोगों का जिन्होंने अन्य साहित्यों में अगणित रत्नों के ढेर देख डाले थे, उस समय के मातृभाषा के साहित्य से सन्तोष न हो सका। अत अब दिनों दिन हिन्दी के विविध अंगों की पूर्ति की जाने लगी, क्योंकि इस संसार में मनुष्य को उसका सात्विक

1933

१—कपड़े की आत्म कहानी।

२—गर्मी की छुट्टियों के कार्यक्रम के सम्बन्ध म पिता को पत्र।

३—गुरु भक्ति।

1934

१—अपने निकटतम सम्बन्धी की मृत्यु पर अपने हृदय के भाव।

२—एक ७० वर्ष के बूढ़े की आकृति का विनोदपूर्ण वर्णन।

1935

१—पुस्तकों के अध्ययन का आनन्द।

२—किसी दरिद्र भिक्षुक की आत्म कहानी।

३—जीवन में अहिंसा का महत्व।

1936

१—भारत में बेकारी के कारण और उनके दूर करने के उपाय।

२—जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना।

३—मनोरंजन के आधुनिक साधन।

1937

१—कवि सम्मेलन।

२—वर्षा ऋतु।

३—विद्यालय का वार्षिकोत्सव।

SUBJECTS FOR ESSAYS RAJPUTANA FROM PAPER

(1931—36)

1931

(१) विद्यार्थी-जीवन के आनन्द ।
(२) सदाचार ।
(३) खेल-कूद से लाभ ।

1932

(१) मितव्ययिता ।
(२) किसी यात्रा का वर्णन ।
(३) पुस्तकालय से लाभ ।

1933

(१) सत्यप्रियता,
(२) वीरता ही मनुष्य का भूषण है,
(३) किसी रमणीक स्थान का वर्णन ।

1934

(१) विद्यार्थी जीवन के आनन्द ।
(२) 'साँच बरोबर तप नहीं, झूँठ बरोबर पाप' ।
(३) भारतीय इतिहास का कोई प्रसिद्ध पुरुष ।

1935

(१) विज्ञान के चमत्कार ।
(२) धन का सदुपयोग ।
(३) 'संगति ही गुन ऊपजै संगति ही गुन जाय ।

1936

(१) विद्यार्थी जीवन ।
(२) शिक्षा में खेलों का स्थान ।
(३) साँच बरोबर तप नहीं, झूँठ बरोबर पाप ।

जिस समय वह सेनापतित्व कर रहा हो उस समय पिता को भी उसकी आज्ञा माननी चाहिए।

आज्ञा पालन में मनोवृत्तियों पर पूरा-पूरा नियन्त्रण रखना चाहिए। कभी कभी पैशाचिकवृत्ति के स्वामी, अध्यापक, पति और पदाधिकारी, बिना विचार किये अपनो बात का ठीक कराने के लिए आज्ञाएँ प्रदान करते हैं, उस समय मनोवृत्तियों से एक युद्ध लड़ना पड़ता है। उस समय आज्ञा-पालन और उल्लघन प्रवृत्ति में सङ्घर्ष चल पड़ता है। उस समय मनोवृतियों को पूरे समय तक अधिकार में रखना चाहिए। ऐसी परिस्थिति में मरण जीवन का प्रश्न आजाता है, किन्तु प्रत्येक परिस्थिति मे शान्ति और सुख केवल आज्ञा पालन ही में मिलता है। आज्ञा पालन में आत्म पालन में आत्म सयम रखना ही सर्वश्रेष्ठ गुण है। जो लोग दूसरों की आज्ञा में अपने को नहीं रख सकते, वे अपनी प्रबल वासना और उत्कट अभिलाषाओं पर भी विजय प्राप्त नहीं कर सकते। आज्ञा पालन सुख और शान्ति को लाता है। वासना और मनोवृत्तियों को सयत बनाता है। समाज और व्यक्तियों में स्नेह और प्रेम का सञ्चार करता है। सङ्घ शक्ति को सबल बनाता है। जिन जातियों और समाजो में आज्ञा पालन की प्रवृत्तियाँ नहीं वे उच्छृङ्खल और असभ्य कही जाती हैं। जिस सेना, परिवार और समाज के व्यक्ति अपने सेना नायक, स्वामी और अध्यक्ष का कहना नहीं मानता उसमें कोई नियम या व्यवस्था नहीं रहती। जिन राष्ट्रों में अथवा समाजों में 'हमीं चुनी दीगरे नेस्त' वाले

बहुसख्यक नेता बनने के अभिलाषा रखते हैं। वे राष्ट्र और समाजें प्राय नष्ट हो जाती हैं। जनता को अपना अध्यक्ष और नेता एक ही मानना पड़ेगा। उसकी आज्ञा का पालन करना पड़ेगा, तभी वे राष्ट्र और समाज पनपेंगे और ससार के सङ्घर्ष के क्षेत्र में अपने अस्तित्व को स्थिर रख सकने में सफल होंगे। जिन परिवारो में बड़ों की आज्ञा पालन करने की प्रवृत्ति है उन्हीं परिवारों में सुख और शान्ति का साम्राज्य देखने में आता है। आज्ञा पालन भी अभ्यास से होता है। प्रत्येक अवसर पर अपने को आज्ञा पालन के सूत्र में बँधे रखना चाहिए। अशिक्षित और असभ्य जातियों में दुराग्रह और हठ अधिक देखे जाते हैं, किन्तु सभ्य और सुसस्कृत जातियाँ आज्ञा पालन ही से अपने सुशिक्षित होने का परिचय देती हैं। जो व्यक्ति स्वय आज्ञा पालन नहीं कर सकता, वह दूसरों से भी आज्ञा पालन कराने में समर्थ नहीं हो सकता है। आज्ञा पालन में छोटा बन जो नीचा बनता है, वही पीछे ऊँचा पद पाता है। प्राय सभी आज्ञा पालन ही से सिपाही के पद से अध्यक्ष के पद तक पहुँचते हैं। सभ्य देश ही आज्ञा पालक व्यक्ति पैदा करने में समर्थ हो सकते हैं। भगवान्! भारतियों के दुराग्रह और हठ को छुड़ा उन्हें कर्मनिष्ठ बना।

इस ससार में परशुराम को कौन नहीं जानता? जिन्होंने अपने पिता जमदग्नि के कहने से अपनी माता रेणुका का सिर काट डाला। एक तरह अनुचित कार्य्य था परन्तु आज्ञा पालन

के सूत्र में बँधकर परशुराम ने ऐसा आदर्श दिखाया जिसके कि कारण वह संसार में प्रसिद्ध हुए। हालांकि जमदग्नि के और भी पुत्र थे परन्तु वह आज्ञाकारी न थे। उनसे भी उन्होंने रेणुका के सिर काटने की कही थी परन्तु उनमें से कोई भी इस कार्य्य के करने को तैयार न हुआ। अन्त में परशुराम ने ही पिता की आज्ञा से अपनी माता का सिर काटा। आज्ञा पालन का उदाहरण इससे क्या ऊंचा हो सकता है। जैसा कि तुलसीदास जी ने कहा भी है —

'परशुराम पितु आज्ञा राखी,
मारी मातुलोक सब साखी'।

क्या श्री रामचन्द्र जी को सुख प्रिय न था? अवश्य था, परन्तु वह बड़े आज्ञा पालक थे। इनका स्वभाव भी आदर्श था। जब यह अपने पिता के मुख से प्रथम यह सुनते कि कल मेरे लिए राज-गद्दी होगी तो इनको इसका तनिक भी हर्ष न हुआ और फिर सहसा दूसरे दिन अपने लिए १४ साल का वनवास होना सुनते हैं तो तनिक भी रंज न हुआ। इन्होंने अपने माता पिता दोनों ही की आज्ञा का पालन किया। पिता इनके सोच में स्वर्गलोक सिधार गये। श्रीरामचन्द्र जी वनगामी हुए और पिता की आज्ञा पालन करने ही से आज वे मर्य्यादा-पुरुषोत्तम कहलाते हैं।

भीष्मपितामह को कौन नहीं जानता? यह पिता की इच्छा जानकर उसके औचित्यनौचित्य का विचार किये

बिना ही आजन्म विवाह न करने की प्रतिज्ञा कर बैठे। इसीके प्रताप से यह महाभारत युद्ध में सबसे प्रसिद्ध हुए। यह सब आज्ञा पालन की ही महिमा है। वीर बभ्रुवाहन अर्जुन का ही पुत्र था परन्तु क्या हुआ कि इसने अपनी माता अलूपी के कहने से अपने ही पिता को स्वय अपने ही हाथों से युद्धस्थल में मूर्छित कर गिराया। इसम बभ्रुवाहन का क्या दोष? वह तो आज्ञाकारी था। उसने प्रथम अपने पिता का स्वागत किया तब अर्जुन ने उससे स्वय खुल्लमखुल्ला यह शब्द कहे कि तू मेरा पुत्र नहीं है। यदि तू मेरा पुत्र होता तो मेरा स्वागत युद्ध करके करता। यह बात अलूपी को जो कि बभ्रुवाहन के साथ गई थी बहुत बुरी लगी। उसने कहा—कि बेटा देखो तेरे बाप ने हमको दोष लगाया है इसका फल तुम अवश्य दो। बस फिर क्या था? वह अपनी माता के वचन तथा पिता की बातें सुनकर युद्ध के लिए सज गया और अपने बाहु बल से अर्जुन को युद्ध में मूर्छित कर दिया अन्त में नागकन्या ने इसे सचेत किया। तत्पश्चात् अर्जुन ने बभ्रुवाहन को अपने गले लगाया। बभ्रुवाहन अपने पिता के आशीर्वाद से ही बड़ा वीर योद्धा हुआ जिसने महाभारत युद्ध में अपार ख्याति पैदा की। यह सब आज्ञा पालन का ही प्रताप है। आज्ञा पालन के ज्वलन्त उदाहरणों ही से आर्य-जाति अपना गौरव रख सकी है। आज्ञा-पालन करने में औचित्यानौचित्य का प्रश्न ही नहीं बनता। प्रथम तो बड़ों से यह आशा ही न करनी चाहिए

कि वे कभी अनुचित प्रस्ताव करेंगे, और यदि कदाचित अनुचित प्रस्ताव ही रख दें तो इसका दोष आज्ञा देने वाले के सिर है न कि आज्ञा पालन करने वाले के ऊपर। किन्तु कुछ आज्ञाएँ और प्रस्ताव धर्म और सदाचार के सर्वथा विपरीत होते हैं, उनका मानना ठीक नहीं, इसमें सेवक उसके अनौचित्य को अपने आज्ञा देने वाले को जता दे।

पुलिस और फौज में औचित्यानौचित्य का विचार किये बिना ही आज्ञा पालन में लग जाना कर्तव्य है। उचित अनुचित का विचार कमाँडर ही करेगा, सिपाही का काम आज्ञा पालन में जुट जाना है। यही सिद्धान्त आज्ञा पालन का सच्चा स्वरूप है।

आज्ञापालन ही के कारण ब्रिटिश, जर्मन आदि बड़े बड़े देश आज संसार में प्रभावशाली हो रहे हैं। यह देश आज्ञा पालन के ही सूत्र में भली प्रकार बंधे हुए हैं। इसीके प्रताप से ही समस्त संसार में गौरवशाली गिने जाते हैं। यह सब आज्ञा पालन की महिमा है। इसलिए संसार में प्रत्येक मनुष्य का आज्ञा-पालन करना ही मुख्य धर्म है।

IDIOMS AND PROVERBS FROM PAPERS U P.

(1931—36)

धड़क खुलना
विष का घूट पीना
बात जल्दी लगना
छटपटाना
बाबा आदम का समय
अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना
दूज का चाँद
जान के लाले पड़ना
बुत बन जाना
हाथ के तोते उड़ना
पानी पानी हो जाना
माथे पर बल न आने देना
ईंट का जवाब पत्थर से देना
गेहूँ के साथ घुन का पिसना
पौ बारह होना

IDIOMS AND PROVERBS FROM PAPERS RAJPUTANA

(1931—35)

1931

नाक का बाल होना, पीठ में धूल लगना, गाते गाते विवाह हो जाना, आँखें चार होना, बिना पेंदी का लोटा।

अदरक का स्वाद'। यह तो मूर्ख मण्डली है यह मेरी क्या क़दर जानते हैं।

अर्थ सहित कुछ मुहाविरे तथा कहावतें

मुँह अपना सा लेकर रह जाना—निराश होना।

मुँह उतर जाना—उदास होना।

मुँह काला करना—अपराध लगना।

मुँह के कौवे उड़ जाना—उदास होना, व्याकुल होना।

मुँह देख कर बात करना—खुशामद करना।

मुँह देख रहना—आश्चर्य होना।

मुँह देखे की प्रीति—बाहरी प्रेम।

मुँह पर गर्म होना—सामने क्रोध करना।

मुँह बन्द करना—बोलने न देना।

मुँह में पानी आना—अधिक चाह होना।

मुँह से फूल झड़ना—आशीर्वाद देना, प्रसन्न होना।

नाक काटना—अनादर करना।

नाक कटी होना—अपना मान खोना।

नाक का बाल—अत्यन्त मुख्य।

नाक चढ़ाना—क्रुद्ध होना।

नाक रखना—प्रतिष्ठा रखना।

नाक सिकोड़ना—अप्रसन्न होना।

नाम करना—प्रसिद्ध होना।

एक ही लकड़ी से सबको हाँकना—भले बुरे सबके साथ एक सा बर्ताव करना।

करनी खाक की, बात लाख की—काम कुछ नहीं बातें बड़ी-बड़ी।

करनी न करतूत, लड़ने को मौजूद—बिना बात झगड़ा करना।

काली घटा डरावनी और धौली बरसनहार—दिखावटी और सत्य में अन्तर है।

कल काशीय देउ बहाय आजका लिया देखो भाय	गुजर गया उसे जाने दो।
खाय तो घी से नहीं जाय जी से कै हंसा मोती चुगें, कै लंघन ही मर जाय	खाय तो अच्छी चीज खाय नहीं तो लंघन ही मर जाय।

खाली बनिया क्या करे, इस कोठी के धान उसमें धरे—काम करने वाला कभी बैठा नहीं रहता।

खरबूजे को देख कर खरबूजा रंग बदलता है—देखा देखी शौक होना।

गधा गिरे पहाड़ से और मुर्गी के टूटे कान—असम्भव बात।

गैर का सिर पसेरी बराबर—दूसरे की परवा नहीं।

गाल वाला जीते और माल वाला हारे—बहुत शोर मचा कर अपनी चला लोगे।

ओछे के पास बैठ कर अपनी भी पति जाय—नीच के साथ मत रहो।

ओलाती का पानी बगरे पर नहीं चढ़ता—असम्भव बात नहीं होती।

कर्म हीन खेती करै बैल मरै कि सूखा परै—अभागे के जरूर दुख होता है।

कमाई का खूँटा और खाली रहै?—कोई न कोई आ ह मरता है।

कहे तो माँ मारी जाय न कहें तो बाप को कुत्ता खाय—दोन तरह मुश्किल।

कहे खेत की सुनै खलियान की—अन्धा धुन्ध काम करना

कहने से कुम्हार गधा पर नहीं चढ़ता—मूर्ख कहने से न मानता।

काम प्यारा कि चाम—सुन्दरता नहीं, काम देखा जाता है।

वक्त गया पर कहावत रह गई—बात बनी रहती है।

नोट—बहुधा देखा गया है कि विद्यार्थीगण बिना अ समझे हुए ही कितने ही ऐसे अनर्थ प्रयोग कर देते हैं जिन कि कोई सार्थक तात्पर्य नहीं होता वे सबके सब निरर्थक होते हैं ऐसे प्रयोग करने से कोई लाभ नहीं प्रयोग करने के लिए सबसे प्रथम अर्थ की जानकारी प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक है। अतएव हमारा विद्यार्थियों से अनुरोध है कि वह बिना अर्थ की जानकारी के प्रयोग कदापि न करें चाहे शब्द हो चाहे मुहाविरे हों और चाहे कहावतें हों। इसी हेतु हमने उपर्युक्त आदर्श के लिए कुछ मुहाविरे तथा कहावतें अर्थ सहित दे दी हैं ताकि विद्यार्थी उनसे पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कर सकें। इनके विशेष ज्ञान के लिए 'लोकोक्ति कौमुदी' नामक पुस्तक से